

यूरोप की कहानियाँ

अबरार मोहसिन



यूरोप की कहानियाँ

अबरार मोहसिन
कामरान मोहसिन

ईशान प्रकाशन
नई दिल्ली-110 002

मूल्य : रु. 30.00

पहला संस्करण : 2002

प्रकाशक : ईशान प्रकाशन
7/23, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

चित्र : शिवकुमार सिन्हा

EUROPE KI KAHANIYAN
by Abrar Mohsin & Kamran Mohsin

क्रम





अमर देश

बहुत दिन हुए, किसी देश के राजा का एक बेटा था। राजा ने देश के महान शिक्षकों और विद्वानों से उसे शिक्षा दिलवाई, फिर उसे अनुभव प्राप्त करने के लिए देश-विदेश की यात्रा करने को कहा।

जब वह कई वर्षों के बाद वापस लौटा तो राजा ने देखा कि वह गम्भीर विचारों में डूबा हुआ लगता था।

ऐसा लगता था, जैसे उसके मन पर कोई बोझ हो !

यह देखकर राजा ने उसे अनेक देशों की सुन्दर राजकुमारियों के चित्र दिखाए।

"इनमें से जिसे भी तुम्हारा मन चाहे, चुन लो। उसी के साथ तुम्हारा विवाह करा दिया जाएगा।" राजा ने कहा।

राजकुमार ठंडी साँस लेकर बोला, "मेरे गम्भीर विचार इस कारण नहीं हैं कि मैं विवाह करना चाहता हूँ।"

"फिर क्या कारण है ?" राजा ने पूछा।

राजकुमार ने उत्तर दिया—

"मैं इस विचार से दुखी हूँ कि मनुष्य मर क्यों जाता है ? काश, मैं उस देश में जा सकता जहाँ कभी कोई मरता ही न हो ! मैं ऐसे देश की खोज में निकलना ही चाहता हूँ। यहाँ तो मेरा दम घुटता है और दिल घबराता है।"

और वह ऐसे ही देश की खोज में एक लम्बी यात्रा पर निकल पड़ा।

चलते-चलते वह एक जंगल में पहुँचा जहाँ उसने देखा, एक बड़ा-सा अक़ाब (गरुड़) एक वृक्ष की शाखा को ज़ोर-ज़ोर से हिला रहा था।

फिर वह नीचे उतर आया और देखते ही देखते उसने मनुष्य का

रूप धारण कर लिया।

"कहाँ जा रहे हो ?" उस मनुष्य ने उससे पूछा, "इस घने जंगल में तुम जैसे राजकुमार का क्या काम है ?"

राजकुमार ने अब ध्यान से देखा, उस मनुष्य के सिर पर ताज रखा था।

वह बोला, "मैं एक ऐसे देश की खोज में निकला हूँ जिसमें कभी कोई मरता ही न हो।"

वह मनुष्य उसकी बात सुनकर बोल उठा—

"तब तो ठीक स्थान पर आ गए हो। मैं इस देश का राजा हूँ, और मेरे देश में उस समय तक कोई नहीं मरेगा जब तक मैं इस वृक्ष को जड़ से न उखाड़ फेंकूँ। ऐ युवक, इस काम में मुझे पाँच सौ वर्ष लग जाएँगे। तुम मेरे देश में ही रहने लगो। पाँच सौ वर्ष तक तो तुम नहीं मर सकते।"

उसकी बात सुनकर राजकुमार ने सिर हिलाया और कहा—

"परन्तु पाँच सौ वर्ष के बाद तो मरना ही होगा ! नहीं, मैं यहाँ नहीं रह सकता। मुझे मत रोको।"

और वह आगे चल पड़ा।

कई दिनों की यात्रा के बाद वह एक पहाड़ के पास पहुँचा जहाँ उसे एक मनुष्य दिखाई दिया। वह एक फावड़े से मिट्टी खोदकर एक टोकरी में भर रहा था। उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछें थीं।

उसने राजकुमार को देखकर कहा, "कहो, कहाँ चले ?"

राजकुमार ने उत्तर दिया—

"मैं मरना नहीं चाहता इसलिए उस देश की खोज में निकला हूँ जहाँ कोई नहीं मरता।"

मूँछों वाला यह सुनकर कहने लगा, "आओ, मेरे साथ मेरे घर चलो।" यह कहकर वह एक झाड़ी में गया, और जब बाहर आया तो उसने राजा के वस्त्र पहन रखे थे और उसके सिर पर ताज जगमगा रहा था।

"मेरे साथ आओ।" उसने कहा।

वह उसे एक महल में ले गया जहाँ एक सुन्दर लड़की ने उनका



स्वागत किया।

राजा ने कहा, "यह मेरा महल है और यह लड़की मेरी बेटी है। मुझे उस पहाड़ को खोदकर दूर फेंकना है और जब तक मैं यह काम पूरा न कर लूँगा, मेरे देश में कोई नहीं मर सकता। ऐ युवक, इस काम को करने में मुझे नौ सौ वर्ष लग जाएँगे। तुम मेरी बेटी से विवाह करके यहीं रहो—नौ सौ वर्ष तक।"

राजकुमार उसकी बात ध्यान से सुनता रहा, फिर बोला—

"ऐ राजा, नौ सौ वर्ष के बाद भी तो मुझे मर जाना होगा ! नहीं, नहीं, मैं यहाँ नहीं रह सकता। मुझे जाना ही होगा, उस देश की ओर जिसमें कभी कोई मरता ही न हो। मैं यहाँ नहीं ठहर सकता।"

राजकुमारी, जो उसकी बात ध्यान से सुन रही थी, ठंडी साँस भरकर बोली—

"अगर तुम जाना ही चाहते हो तो यह अंगूठी लो। जहाँ भी तुम जाना चाहो, यह तुम्हें क्षण-भर में पहुँचा देगी। बस, तुम्हें आँखें बन्द करनी होंगी।"

राजकुमार अंगूठी लेकर चल पड़ा।

एक और लम्बी यात्रा के बाद एक समय ऐसा आया जब वह चलते-चलते थककर चूर हो गया।

अचानक उसे अंगूठी की याद आई। उसने आँखें बन्द करके मन में कहा—'काश, मैं धरती के अन्त तक पहुँच जाता !'

जब उसने आँखें खोलीं तो देखा, वह एक नगर में खड़ा था, जहाँ नीले पत्थर से बना एक बड़ा ही सुन्दर महल था।

उसने वहाँ बहुत-से लोगों को सड़क पर आते-जाते देखा और उनसे पूछना चाहा कि वह कौन-सा नगर है, परन्तु कोई भी उसकी भाषा नहीं समझ सका।

इतने में एक बूढ़ा उसके पास आकर बोला, "मैं तुम्हारी भाषा समझ सकता हूँ। यह नगर धरती के अन्त पर बसा हुआ है। वह नीला भवन राजमहल है। अब उसमें राजा की बेटी रहती है। राजा मर चुका है और राजकुमारी सिंहासन पर बैठी है क्योंकि राजा की और कोई सन्तान नहीं है।"

राजकुमार ने कहा, "मुझे राजमहल में ले चलो।"

बूढ़ा उसे महल के द्वार पर ले गया और कहा, "तुम अन्दर चले जाओ।"

महल में घूमता हुआ वह वहाँ पहुँचा जहाँ दरबार लगा था और सिंहासन पर राजकुमारी नीले कोहरे की चादर में लिपटी बैठी थी। सिंहासन में हीरे-मोती जड़े हुए थे।

राजकुमारी का चेहरा इस प्रकार से चमक रहा था, जैसे किसी पहाड़ की बर्फ़ से ढँकी चोटी पर पूरे चाँद की चाँदनी झिलमिलाती है।

उसे देखकर वह बोली—

"तुम कौन हो, अजनबी ? और मेरे नगर में कैसे आना हुआ ?"

वह बोला—

"ऐ राजकुमारी, मैं उस देश की खोज में निकला हूँ जहाँ कोई नहीं मरता। मैं एक लम्बी यात्रा के बाद यहाँ पहुँचा हूँ, परन्तु मंज़िल अभी तक नहीं मिली।"

उसकी बात सुनकर राजकुमारी ने कहा, "ऐ अजनबी ! आओ मेरे साथ।" वह उसे एक कमरे में ले गई जिसके फ़र्श पर सुइयाँ लगी हुई थीं—हज़ारों !

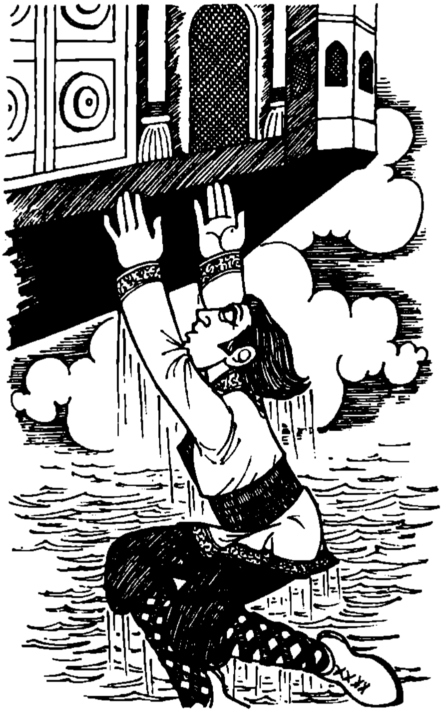
राजकुमारी ने कहा, "इस नगर में कोई उस समय तक नहीं मर

सकता जब तक मैं वस्त्र सीते-सीते इन सब सुइयों को न घिस दूँ। इस काम में एक हज़ार वर्ष लग जाएँगे। तुम इसी नगर में रहो और मुझसे विवाह करके एक हज़ार वर्षों तक मज़ा करो।''

राजकुमार ने उसकी बात सुनकर कहा—

''ऐ राजकुमारी ! एक हज़ार वर्ष बहुत होते हैं, परन्तु एक समय ऐसा आएगा जब वे भी बीत जाएँगे और मुझे मरना होगा। नहीं, मैं यहाँ नहीं ठहर सकता। मुझे तो उस देश में जाना है जहाँ कोई मरता ही न हो। मैं जा रहा हूँ।''

राजकुमारी ने बहुत समझाया, परन्तु उसने नहीं सुना और वहाँ से चल पड़ा। नगर से थोड़ी दूर चलकर धरती का अन्त आ गया। आगे पानी ही पानी था। उसने मुँह उठाकर देखा तो एक बड़ा ही सुन्दर महल दिखाई दिया—जो पानी के ऊपर हवा में लटका हुआ था। उसने छलाँग लगाकर उस तक पहुँचना चाहा, परन्तु असफल रहा। जब भी वह छलाँग लगाता, फिर नीचे आ गिरता था।



उसने फिर भीसाहस नहीं छोड़ा और छलाँगें लगाता ही रहा।

अन्त में एक छलाँग उसे ऊपर ले ही गई।

कैसा महल था वह ? महल नहीं, वह तो एक देश था ! वह धरती से ऊपर, हवा में लटक रहा था।

क्या अब वह मंज़िल तक पहुँच गया था ? क्या उस देश में कभी कोई मरता नहीं था ?—इन प्रश्नों के उत्तर उसे जल्द ही मिल गए।

महल के झरोखे से रानी झाँक रही थी। उसने राजकुमार को देखकर उसे महल के अन्दर बुलाया और पूछा, "यहाँ कैसे आना हुआ ?"

"मैं उस देश की खोज में आया हूँ जहाँ कभी कोई मरता ही न हो।"

वह हँसकर बोली–

"यही वह देश है। तुम ठीक स्थान पर आ पहुँचे हो। यहाँ मृत्यु कभी नहीं आ सकती। जो भी यहाँ रहता है, वह अमर हो जाता है।"

राजकुमार खुश हो गया। उसे मंज़िल मिल गई थी।

उसे वहाँ रहते-रहते दस वर्ष हो गए।

एक दिन वह किसी चिन्ता में डूबा हुआ दिखाई दिया।

रानी ने पूछा, "तुम कुछ दुखी लगते हो ! बताओ, कौन-सी चिन्ता ने तुम्हारे मन को घेरा है ? क्या अमर हो जाने पर भी तुम्हारी संतुष्टि नहीं हुई ?"

राजकुमार ने कहा, "ऐ रानी ! वैसे तो मैं यहाँ आकर बहुत खुश हूँ; परन्तु मुझे माता-पिता की याद सता रही है। क्या मैं उन्हें देखने जा सकता हूँ ?"

रानी उसकी ओर देखती रही, कुछ बोली नहीं।

राजकुमार ने फिर कहा, "मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, उन्हें एक नज़र देखकर तुरन्त वापस लौट आऊँगा।"

रानी गंभीर आवाज़ में बोली–

"ऐ युवक ! कुछ पता भी है, तुम्हें यहाँ आए हुए कितने वर्ष बीत चुके हैं ?"

"क्यों नहीं ?" उसने कहा, "दस वर्ष।"

रानी ने कहा–

"इस देश के दस वर्ष तुम्हारे संसार के एक हज़ार वर्ष के बराबर होते हैं। एक हज़ार वर्ष बीतने के बाद तुम्हारे लिए वहाँ क्या बचा होगा ?"

राजकुमार फिर भी अपनी बात पर अड़ा रहा।

रानी ने मजबूर होकर कहा, "तुम नहीं मानते हो तो जाओ।"

यह कहकर उसने राजकुमार को एक बोतल देकर कहा, "इस

बोतल को अपने पास रखो। इसमें जादुई पानी है। अगर किसी मरे हुए मानव पर इसके छींटे डाल दो तो वह जीवित हो जाएगा।"

राजकुमार बोतल लेकर चल दिया और सबसे पहले उस नगर में पहुँचा जहाँ महल के अन्दर रानी नीले कोहरे में लिपटी बैठी थी।

जब वह महल में पहुँचा तो देखा, रानी मरी पड़ी थी। वह आश्चर्य से उसे देख रहा था कि अचानक एक विचार उसके मन में आया।

वह झपटकर उस कमरे में पहुँचा जिसका फ़र्श उसने सुइयों से ढँका देखा था। अब वहाँ एक भी सुई नहीं थी।

"इसी कारण यह मर गई है।" वह बड़बड़ाया।

फिर उसे बोतल की याद आई और उसने पानी के छींटे रानी के मुँह पर डाले।

रानी तुरन्त उठ बैठी और अँगड़ाई लेकर बोली, "ऐसा लगता है, मैं देर तक सोती रही हूँ।"

वह बोला, "तुम सोई नहीं थीं, मर गई थीं। अगर मैं न आता तो तुम्हें जीवन भी न मिलता। कमरे में अब एक भी सुई नहीं रह गई है।"

रानी ने कहा, "तुमने मुझे दूसरा जीवन दिया है। क्या तुम मेरे साथ जीवन नहीं बिता सकते ?"

"मुझे अपने घर जाना है।" यह कहकर वह आगे बढ़ गया।

एक लम्बी यात्रा करके वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ बड़ी-बड़ी मूँछों वाले को एक पहाड़ के पास खुदाई करते हुए देखा था।

वहाँ पहुँचकर वह चकरा गया।

मूँछों वाला मरा पड़ा था—और वह पहाड़ वहाँ नहीं था।

उसने बोतल के पानी के छींटे मारे तो मूँछों वाला जम्हाई लेता हुआ उठ बैठा और उसे देखकर बोला—

"अरे, तुम कब आए ? क्षमा करना, मैं तनिक सो गया था।"

राजकुमार मुस्कुराकर कहने लगा—

"तुम तनिक सोए नहीं, मर गए थे।"

वह हड़बड़ाकर चिल्लाया, "मैं मर गया था !"

फिर चारों ओर देखता हुआ बोला, "तुम ठीक कहते हो। मैंने पूरा पहाड़ खोद डाला था। मुझे इस पहाड़ को खोदना ही था क्योंकि पहाड़

खोदकर मरना ही मेरे नसीब में लिखा था; परन्तु मैं जीवित कैसे हुआ ?''

''मैंने तुम्हें जादुई पानी द्वारा दूसरा जीवन दिया है।'' राजकुमार ने बताया।

''अब तुम मेरे पास रहो।''

''नहीं, मैं अपने माता-पिता से मिलने जा रहा हूँ।''

''परन्तु वे अब कहाँ जीवित होंगे ?'' मूँछों वाले ने कहा।

''फिर भी मैं अपने घर को तो देख ही लूँगा।'' राजकुमार ने उत्तर दिया और चल पड़ा।

चलते-चलते वह उस जंगल में पहुँचा जहाँ अक़ाब राजा वृक्ष की शाखा को हिलाता हुआ मिला था।

अब उसने देखा कि वृक्ष जड़ों समेत उखड़ा पड़ा था और अक़ाब उसके पास ही मरा पड़ा था।

राजकुमार ने उसके मुँह पर जादुई पानी के छींटे मारे। उसने आँखें खोल दीं और बोला—

''मैं गहरी नींद सो गया था।''

राजकुमार ने कहा—

''तुम गहरी नींद नहीं, मौत की नींद सो रहे थे। मैंने तुम्हें जीवन दिया है।''

अक़ाब राजा ने उखड़े हुए वृक्ष को देखकर कहा, ''अरे हाँ, मुझे तो अब मरना ही था। मैं तुम्हारा आभारी हूँ। अब तुम मेरे साथ रहो।''

''नहीं, मुझे अपने घर जाना है।'' यह कहकर वह आगे की ओर चल दिया। जब वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ उसका नगर था तो वहाँ उसे केवल एक झील दिखाई दी जिसका नीला पानी दूर-दूर तक फैला हुआ था।

वह झील के तट पर खड़ा बीते दिनों की याद में खोया हुआ था कि एक भारी आवाज़ ने उसे चौंका दिया :

''एक हज़ार वर्षों से तुझे खोज रही हूँ और तू आज मिला है ! मुझसे छुपकर आज तक भला कौन बच सका है ? अब चल मेरे साथ...''

राजकुमार ने पहचान लिया—

वह मृत्यु थी, जो एक भयंकर रूप में उसकी ओर बढ़ी चली आ रही थी।

"अब तू मेरे पंजे से निकलकर कहाँ जाएगा ?"

मृत्यु उसकी ओर झपटी चली आ रही थी।

वह घबरा गया।

अब कैसे जान बचाए ?

"अब मैं नहीं बच सकता," वह हाथ मलकर बोला, "काश, मैं अमर देश से बाहर निकला ही न होता !"

मृत्यु उसके बहुत पास आ चुकी थी।

वह उसकी दहाड़ें सुन रहा था—



"मैं प्रत्येक जीवन का अन्त हूँ। मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता। मेरे हाथ बड़े लम्बे हैं।"

मृत्यु ने अपना पंजा उसकी ओर बढ़ाया।

अचानक उसे अंगूठी का ध्यान आया।

उसने आँखें बन्द करके कहा, "मुझे अमर देश को जाना है।"

जब उसने आँखें खोलीं तो देखा, वह अमर देश की रानी के महल के झरोखे में खड़ा था—और दूर मृत्यु दाँत पीसकर कह रही थी—

"बाल-बाल बच गया !"

दूसरी इच्छा

समुद्र तट से कई मील दूर एक छोटा-सा गाँव बसा हुआ था। उसमें एक मछेरा रहता था।

वह बहुत ग़रीब था और एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में अपनी पत्नी और दो बालकों के साथ जीवन बिता रहा था। जीवन ने उसे काँटे ही काँटे दिए थे—आधा पेट भोजन, फटे कपड़े और जानतोड़ मेहनत।

दिन-भर समुद्र में अपनी छोटी-सी नाव में बैठकर पुराने जाल में मछलियाँ पकड़ता, उन्हें पास के बाज़ार में बेचकर खाने-पीने का सामान ख़रीदकर जब लौटता तो रात हो जाती और वह थककर चूर हो जाता।

कभी-कभी तो दिन-भर की मेहनत के बाद भी जाल ख़ाली रहता था, या केवल दो-चार मछलियाँ ही हाथ आती थीं।

विशेषकर उस समय तो बड़ी कठिनाई होती जब समुद्र में तूफ़ान आ जाता था। ऐसे समय वह समुद्र में नाव किस प्रकार डालता ?

अंजाम यह होता कि उसके घर में कई-कई दिनों तक चूल्हा ही नहीं जलता था।

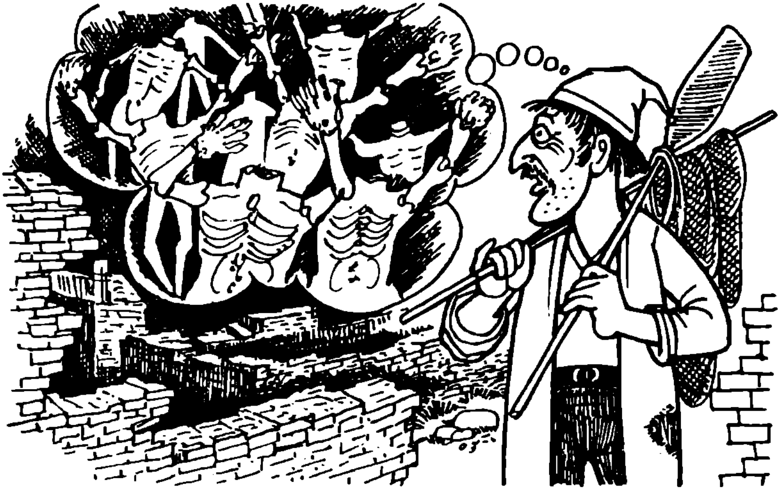
ऐसे दिनों में गाँव के दूसरे लोग उसकी सहायता कर दिया करते थे।

गाँव और समुद्र तट के बीच, मार्ग में कुछ खंडहर मिलते थे। शायद प्राचीन काल में वहाँ किसी राजा का महल रहा होगा !

अब वहाँ पत्थरों के ढेर, टूटी-फूटी दीवारें और एक-आध थम ही बचा रह गया था।

उन खंडहरों में एक कमरा रह गया था—वह भी टूटा-फूटा। केवल तीन दीवारें बची थीं—और छत का एक छोटा-सा भाग, जिसके नीचे वर्षा से बचने के लिए भेड़ें आकर खड़ी हो जाती थीं।

बड़े डरावने खंडहर थे जिनमें चमगादड़ें उड़ती फिरती थीं और रात के सन्नाटों में उल्लुओं की आवाज़ें सुनाई देती थीं। ऐसे वीरान स्थान पर कोई दिन के समय भी नहीं जाता था। जाता भी क्यों ? वहाँ था ही क्या ? गाँव के लोग उन भूतों की अनेक कहानियाँ सुनाया करते थे जो उन खंडहरों में रहते थे और अँधेरी रातों में नाचा करते थे। उन भूतों में सरकटे भी थे।



मछेरा जब भी उन खंडहरों के पास से गुज़रता तो उन्हीं के विषय में सोचा करता था :

'जिस राजा का यह महल था, वह बड़ा ही भाग्यवान रहा होगा। उसके जीवन में तो सुख ही सुख रहा होगा। वह राजा इस आलीशान महल में रहता होगा। उसकी सेवा के लिए अनेक सेवक होंगे और खाने के लिए स्वादिष्ट भोजन ! उसकी पत्नी कैसी रूपवती होगी ! वह रेशम और सोने के तारों से बने वस्त्र पहनता होगा...!

'...और एक मैं हूँ जो केवल दुर्भाग्य लेकर ही पैदा हुआ हूँ। जीवन ने मुझे दुख ही दिए हैं। एक टूटी-फूटी झोंपड़ी मेरा घर है जिसमें मैं जीवन के दिन बिताता हूँ। मेरे घर में कई-कई दिन चूल्हा नहीं जलता। मेरी पत्नी मैले-कुचैले वस्त्र पहने रहती है। मेरा जीवन भी क्या जीवन है ! यह जीना भी कोई जीना है !'

जब भी वह खंडहरों को देखता, यही विचार मन में आते और वह और भी दुखी हो जाता था।

एक दिन जब वह मछलियाँ पकड़ने गया तो आकाश पर काले बादल छाए हुए थे, वर्षा हो रही थी और तेज़ हवा के कारण समुद्र में ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थीं।

वह ऐसा दिन नहीं था कि वह मछलियाँ पकड़ने निकलता।

फिर भी वह घर जाकर क्या करता ? पत्नी और बालकों के लिए खाने को कुछ भी न था।

दिन-भर वह मौसम के सुधरने की आस में समुद्र तट पर ही एक चट्टान के नीचे बैठा रहा।

जब थोड़े समय के लिए हवा और वर्षा का ज़ोर कम हुआ तो जाल को पानी में डाला। नाव को दूर ले जाना भी सम्भव नहीं था क्योंकि रात हो रही थी। जब जाल बाहर निकाला तो उसमें केवल एक ही मछली फँसी थी।

नाव और जाल को एक सुरक्षित स्थान पर रखकर वह मछली लेकर घर की ओर चल पड़ा।

अभी वह थोड़ी दूर ही गया था कि फिर भारी वर्षा होने लगी और बिजली चमकने लगी।

उस समय वह खंडहर के पास ही था। वर्षा से बचने के लिए वह खंडहर के उसी कमरे में आ गया जिसके ऊपर छत का एक भाग अभी भी बच गया था।

वह उसी के नीचे जाकर खड़ा हो गया।

उस तूफ़ानी रात में वे खंडहर बड़े भयंकर लग रहे थे। वर्षा बहुत तेज़ हो रही थी और हवा साँय-साँय चल रही थी।

ऐसे समय उसे भूतों की वे सारी कहानियाँ याद आ गईं जिन्हें वह सुनता आया था—सरकटे भूतों की कहानियाँ !

अचानक उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा और शरीर काँपने लगा—अँधेरे में कोई उसके सामने आकर खड़ा हो गया था।

क्या वह कोई भूत था ?

उस तूफ़ानी रात में, उन वीरान खंडहरों में किसी आदमी का भला

वहाँ क्या काम था।

अचानक बिजली कई बार चमकी और उसने देखा—

वह एक डरावनी शक्ल वाला एक बूढ़ा था जिसकी आँखें बिल्ली की आँखों के समान थीं, दाँत भेड़िये के जैसे और हाथों में उँगलियाँ नहीं, शेर के पंजे थे।

"मुझे कुछ खाने को दे," बूढ़े की भारी आवाज़ से खंडहर दहल गए।

उसने वही मछली बूढ़े को दे दी।

अँधेरे में उसके मछली खाने की 'कचर-कचर' आवाज़ आने लगी।

फिर बूढ़ा बोला—

"तेरी कोई सी भी दो इच्छाएँ पूरी होंगी।"

बूढ़े की बात सुनकर वह तुरन्त बोल उठा—

"दो इच्छाएँ ! मेरी तो एक ही इच्छा है। काश, मैं एक ग़रीब मछेरा होने के बजाय वह राजा होता जिसके ये खंडहर कभी महल हुआ करते थे ! अगर ऐसा होता तो मेरा जीवन कितना सुखी होता !"

अभी वह यह कह ही रहा था कि बिजली चमकी और बादल गड़गड़ाए—उसके कानों में एक मीठी आवाज़ आई—

"महाराज, आज आप दिन चढ़े तक सोते रहे हैं ! क्या जी अच्छा नहीं है ?"

उसने चौंककर आँखें खोल दीं—

उसके सामने एक सुन्दरी सोने-चाँदी के तारों से बने कपड़े पहने खड़ी उसे प्यार से जगा रही थी। स्वयं वह एक छपरखट पर सो रहा था जिसके चारों ओर रेशम के पर्दे लटक रहे थे। वहाँ अनेक सुन्दर स्त्रियाँ हाथ बाँधे और सिर झुकाए खड़ी थीं।

"अब उठिए भी, महाराज !" वही सुन्दरी बोली, "आज मुझे ही आपको जगाना पड़ा। आज दरबार लग रहा है। जल्दी तैयार हो जाएँ। मैं तो तैयार हो भी गई।"

फिर सारी बात उसकी समझ में आ गई।

उसकी इच्छा पूरी हो चुकी थी।

वह राजा बन गया था—और वह सुन्दरी उसकी रानी थी।

वह झट उठ बैठा, स्नान करके कपड़े पहने, और खा-पीकर सिर पर ताज रखकर रानी के साथ दरबार में गया।

वे दोनों सिंहासन पर बैठ गए।

उस समय उसने मन में सोचा—

'इसे कहते हैं जीना ! यह महल ! यह ठाट-बाट—! यह शान ! यह आराम ! यह सम्मान—! यह पत्नी—! इसी का नाम सुख है ! ...एक वह ग़रीबी का जीवन था ! टूटी हुई झोंपड़ी ! ख़ाली पेट ! फटे कपड़े पहनने वाली वह साधारण शक्ल की पत्नी ! मैं कितना भाग्यवान हूँ !'



अचानक ही भरे दरबार में भगदड़ मच गई।

पड़ोस के राजा ने अपनी सेना के साथ आक्रमण किया था।

शत्रु सैनिक दरबार में घुस आए और उसे पकड़कर ज़ंजीरों में जकड़ दिया। सिंहासन पर शत्रु राजा बैठ गया।

रानी भी शत्रु राजा के साथ ही सिंहासन पर जा बैठी और उसकी ओर घृणा से देखकर बोली, "मैं उसकी पत्नी हूँ जिसके सिर पर ताज होता है—एक क़ैदी की नहीं !"

शत्रु राजा ने आदेश दिया—

"क़ैदी का सिर काट दिया जाए !"

वह काँप उठा।

उसने चिल्लाकर कहा—

"मुझे राजा का यह जीवन नहीं चाहिए। यह तो नर्क है—मछेरे का

जीवन इससे कहीं अच्छा था। उसमें ग़रीबी थी, भूख थी, मैली-कुचैली पत्नी थी...परन्तु सिर कटने का डर तो न था...ऐसी बेवफ़ा पत्नी तो न थी जो दुख में साथ छोड़ भागे...ऐसा राजा बनने से तो मैं मछेरा ही भला था...मेरी पत्नी फटे-पुराने कपड़े पहनकर भी जीवन की डगर पर मेरे साथ-साथ चलती थी...मैंने अपना स्वर्ग छोड़कर नरक में छलाँग लगा दी है...अब मैं क्या करूँ ?''

राजा ने जल्लाद से कहा—

''बस, अब इसका सिर काट दो।''

वह चिल्लाया—

''नहीं, नहीं, मुझे मत मारो ! मैं राजा नहीं, ग़रीब मछेरा हूँ !''

फिर उसे बूढ़े का ध्यान आया और उसने पुकारा—

''ओ बूढ़े, कहाँ है तू ? मुझे बचा ले। मुझे फिर से मछेरा बना दे। यही मेरी दूसरी इच्छा है। मुझे राजा नहीं बनना है !''

अचानक बिजली चमकी।

वह रोते हुए कह रहा था, ''मुझे राजा नहीं बनना है।''

बिजली फिर चमकी—बादल गड़गड़ाए—खंडहर काँप उठे।

वर्षा धीमी हो गई थी—आकाश में कहीं-कहीं तारे भी चमकते दिखाई दे रहे थे।

सामने ही आधी खाई हुई मछली पड़ी थी।

बूढ़े का कहीं पता न था।

वह घर की ओर चल दिया।

जब वह घर पहुँचा तो न जाने क्यों उसका चेहरा खुशी से खिला हुआ था।

पत्नी ने पूछा, ''खुशी का कारण ?''

उसने उत्तर दिया, ''दूसरी इच्छा।''

महामूर्ख

बहुत दिन हुए, किसी छोटे-से नगर में एक युवक रहता था जिसका नाम रॉबर्टू था। उसका बहुत बड़ा खेत था जिस पर वह अंगूर, अंजीर और सेब की फ़सलें उगाता था। उसका घर भी लम्बा-चौड़ा था और उसमें आराम की सारी वस्तुएँ थीं।

उसके माता-पिता मर चुके थे और कोई निकट सम्बन्धी भी नहीं था।

इस संसार में एक प्रकार से वह अकेला ही था, परन्तु उसके अनेक मित्र थे। इसका कारण यह था कि वह हँसमुख था। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था और वह सबके काम आता था।

वह बड़ा ही दयालु था और किसी को दुखी नहीं देख सकता था।

जब भी किसी को परेशानी होती, वह भागा हुआ उसके पास आता क्योंकि उसे विश्वास था कि वह उसका समाधान अवश्य करेगा।

वह गाँव का सबसे सुन्दर युवक था। उसकी आँखें नीली और बाल घुँघराले थे।

एक प्यारी-सी मुस्कुराहट उसके होंठों पर सदा खेलती रहती थी। लोगों का तो यह भी कहना था कि वह सोते में भी मुस्कुराता रहता है। वह अकेला था क्योंकि उसने अभी तक विवाह नहीं किया था।

उसके मित्र उससे कहा करते थे—

'इस प्रकार अकेले जीवन कैसे बिताओगे ? तुम अब विवाह क्यों नहीं कर लेते ?'

वह उन्हें केवल एक ही उत्तर देता था—

'जब कोई लड़की मन को भा जाएगी तो विवाह कर लूँगा।'

मित्र फिर पूछते—

'किस प्रकार की लड़की तुम्हारे मन को भाएगी ? उसमें कौन-सा विशेष गुण होगा ?'

वह मुस्कुराकर कहता—

'वह लड़की जो बहुत ही सुन्दर हो—जिसके रूप का जवाब ही न हो—जिसके रूप की चाँदनी मेरे जीवन में सुख का प्रकाश बिखेरती रहे।'

यह कहकर वह खिलखिलाकर हँस पड़ता था।

नगर की लड़कियाँ उससे कहा करतीं—

'हममें से किसी को क्यों नहीं चुन लेता ?'

'क्या इस नगर में तुझे कोई भी सुन्दरी दिखाई नहीं देती ?'

'लगता है, तेरे लिए परीलोक से कोई परी ही आएगी !'

'हमारे अन्दर तुझे कौन-सी कमी दिखाई देती है ?'

'एक नज़र हमें मुँह उठाकर देख तो ले !'

वह उनकी बातें एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता था। इस पर वे सब झल्लाकर उसे बुरा-भला कहने लगती थीं—

'न जाने अपने को क्या समझता है !'

'घमंडी है।'

'ऐसे लोग ठोकर खाया करते हैं।'

'घमंड का सिर नीचा होता है।'

'हमें भी देखना है, यह कौन-सा तीर मारेगा !'

और एक दिन अचानक ही नगर में धूम मच गई।

उसने नगर की एक सुन्दरी 'मारिया' के साथ अपना विवाह कर लिया।

सभी को उसकी पसन्द पर आश्चर्य हुआ।

नगर में चर्चा हो रही थी—

'रॉबर्टू ने यह क्या किया !'

'मारिया तो नगर की सबसे मूर्ख लड़की है !'

'बुद्धि और सुन्दरता दोनों ही गुण एकसाथ कहाँ मिलते हैं !'

'रॉबर्टू सिर पकड़कर रोएगा।'

'मूर्ख के साथ जीवन कैसे बिताएगा ?'



परन्तु रॉबर्टू तो बड़ा खुश दिखाई देता था।

विवाह के दो-चार दिनों के बाद उसने अपने मित्रों को भोजन पर बुलाया। उस दिन मारिया ने भरपूर सिंगार किया था और वह कोई अप्सरा जैसी लग रही थी।

रॉबर्टू ने मित्रों से कहा—

"तुमने देख लिया, जो मैं कहता था, वह कर दिखाया ! क्या मारिया जैसा रूप किसी और का है ? क्या यह सबसे सुन्दर नहीं है ? मैं कितना भाग्यवान हूँ !"

उसके मित्र एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्कुराए—और मारिया थोड़ी देर के लिए बाहर गई तो उन्होंने रॉबर्टू से कहा—

"परन्तु मित्र, क्या तुम्हें पता नहीं कि यह नगर की सबसे मूर्ख लड़की है ? क्या तुम मूर्ख पत्नी के साथ सुखी जीवन बिता सकोगे ?"

"तुम देख ही रहे हो, मैं कितना खुश हूँ !" उसने उत्तर दिया।

भोजन की मेज़ भाँति-भाँति के स्वादिष्ट भोजनों से भरी हुई थी। सारा भोजन मारिया ने ही बनाया था।

रॉबर्टू कह रहा था—

"क्या ऐसे स्वादिष्ट भोजन बनाने वाली स्त्री का पति कभी दुखी हो सकता है ?"

मित्र आपस में खुसर-फुसर करने लगे–

"परन्तु यह लड़की तो मूर्ख है !"

इतने में शराब समाप्त हो गई।

रॉबर्टू बोला–

"चिन्ता न करो। मैं और मँगवाता हूँ।"

और उसने मारिया से कहा–

"मेरी प्यारी पत्नी, तनिक शराब और ले आओ।"

शराब घर के तहख़ाने में एक बड़े-से बैरेल में रखी रहती थी। मारिया तुरन्त सुराही उठाकर तहख़ाने में पहुँची–और बैरेल की टोंटी को खोलकर सुराही को उससे लगा दिया।

और वह बैठे-बैठे विचारों में खो गई...

'जल्द ही हमारे घर में एक पुत्र का जन्म होगा–सुन्दर-सा, प्यारा-प्यारा बालक–जिसका नाम मैं फ़र्नांडू रखूँगी...मैं और रॉबर्टू उससे बहुत प्यार करेंगे...वह हमारी आँखों का तारा होगा...और फिर एक समय ऐसा भी आएगा जब राबर्टू का प्यार उसके लिए कम हो जाएगा...'

यह सोचते-सोचते उसका दिल भर आया और आँखें भीग गईं। वह विचारों की धारा में बहती रही...

'...रॉबर्टू का ध्यान भी उसकी ओर कम हो जाएगा...इतना कम... कि एक दिन फ़र्नांडू बीमार पड़ेगा...मैं रॉबर्टू को बुलाने के लिए किसी को भेजूँगी...वह अपने मित्रों के साथ बैठा ताश खेल रहा होगा...वह नहीं आएगा...बालक की हालत बिगड़ जाएगी...मैं फिर रॉबर्टू को बुलवाऊँगी...वह अब भी नहीं आएगा...कठोर दिल रॉबर्टू ! और फिर बालक मर जाएगा...' वह चिल्ला उठी–

"हाय...मेरा बालक... ! मेरा फ़र्नांडू...!"

रॉबर्टू और उसके मित्रों ने जो उसका चिल्लाना सुना तो वे घबराकर तहख़ाने में आए।

वहाँ उन्होंने एक अनोखा दृश्य देखा–

बैरेल की टोंटी खुली थी। मारिया उससे सुराही लगाए बैठी थी। सुराही भर चुकी थी और शराब फ़र्श पर बह रही थी।

मारिया फूट-फूटकर रो रही थी।

रॉबर्टू ने टोंटी बन्द करके मारिया से पूछा—

"क्या हुआ ? क्यों रो रही हो ?"

वह सिसकते हुए बोली—

"अब आए हो जब वह इस संसार से चला गया !"

रॉबर्टू कुछ न समझ सका।

"कौन इस संसार से चला गया ?" उसने पूछा।

"फ़र्नांडू !"

"कौन फ़र्नांडू ?" उसने परेशान होकर प्रश्न किया।

वह फूट पड़ी—

"कैसे कठोर हो तुम ! शर्म नहीं आती ! मैंने तुम्हें बार-बार बुलाने भेजा कि फ़र्नांडू बीमार है, परन्तु तुम्हें मित्रों के साथ ताश खेलने से फ़ुर्सत ही कहाँ थी ! अब फ़र्नांडू नहीं रहा। हाय, कैसा प्यारा था ! गोल-गोल चेहरे और नीली आँखों वाला ! तुम्हें उससे तनिक भी प्यार नहीं था।"

रॉबर्टू की समझ में नहीं आया कि वह क्या कह रही थी।

उसने मारिया को झंझोड़कर पूछा—

"यह तुम्हें क्या हो गया है ? क्या कह रही हो तुम ? कौन फ़र्नांडू ? यह किसकी बात कर रही हो ?"

"हाय-हाय !" वह चिल्लाई, "कैसे पिता हो कि बेटे का नाम तक नहीं जानते ! क्या संसार में तुम जैसे पिता भी हो सकते हैं ?"

अब रॉबर्टू भी झल्ला गया और चिल्लाया, "अरे, अभी तो हमारा विवाह हुआ है। तुरन्त ही यह बालक कहाँ से आ गया ?"

मारिया जैसे एकदम से होश में आ गई।

फिर शरमाकर बोली, "परन्तु जब बालक हो जाएगा और कभी बीमार पड़ेगा तो तुम मेरे बुलाने पर तुरन्त चले आओगे न ?"

"हाँ-हाँ !" रॉबर्टू ने झेंपकर उसे समझाया—और उसके मित्र उसकी हँसी उड़ाने लगे।

तहख़ाने से बाहर आकर उन्होंने रॉबर्टू से कहा, "हम कहते थे न कि मारिया महामूर्ख है ! अब तो यह बात मान लो !"

रॉबर्टू ने कहा, "मैं मानता हूँ, मारिया मूर्ख है, परन्तु मुझे विश्वास

है, वह महामूर्ख नहीं है। अब मैं इस नगर के आसपास घूमकर यह पता लगाऊँगा, क्या मारिया वास्तव में महामूर्ख है ?''

मित्रों ने कहा, ''हमें विश्वास है, इससे बड़ा मूर्ख कहीं नहीं मिल सकता।''



उसके अगले दिन ही वह नगर से बाहर चला आया।

चलते-चलते उसने एक वृक्ष के नीचे दो युवकों को खड़े देखा जो एक पतलून के पाइंचे थामे खड़े ऊपर की ओर देख रहे थे।

उनके ठीक ऊपर एक शाखा पर से एक और युवक नीचे कूदने वाला था।

रॉबर्टू ने पूछा—

''यह क्या हो रहा है ?''

नीचे वाले युवक बोले—

''ऊपर की शाखा पर हमारे मालिक खड़े हैं। यह पतलून के अन्दर कूदकर ही इसे पहना करते हैं।''

उनकी बात सुनकर वह हँस पड़ा और मन में कहने लगा—

'यह तो मारिया से भी बड़ा मूर्ख है !'

और वह आगे की ओर चल पड़ा।

कुछ दूर चलने के बाद उसे एक बहुत ऊँचे वृक्ष के नीचे लोगों की भीड़ दिखाई दी।

वृक्ष के ऊपर से कोई चिल्ला रहा था, ''अरे, कोई मुझे नीचे उतार लो—मुझे डर लग रहा है ! मेरी जान बचा लो !''

लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे कैसे नीचे उतारें।

इतने में एक बूढ़े ने कहा, ''एक लम्बी-सी रस्सी और दो बाँस लाओ।''

जब वे वस्तुएँ आ गईं तो उसने दोनों बाँसों को बाँधकर एक लम्बा बाँस बनाया, उसके सिरे पर रस्सी बाँधकर उसे ऊपर उठाया और वृक्ष पर चढ़े हुए व्यक्ति से कहा, "इसका सिरा बाँस पर से खोलकर अपनी पीठ से बाँध लो।"

रॉबर्टू आश्चर्य से चिल्लाया, "यह तुम क्या कर रहे हो ?"

वह बूढ़ा बोला, "वह व्यक्ति वृक्ष पर चढ़ तो गया परन्तु नीचे उतरते हुए डर रहा है। इन नीचे खड़े मूर्खों में से किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे कैसे उतारें। अब तुम देखो, मैं किस बुद्धिमानी से उसे नीचे उतारता हूँ। इससे पहले इसी उपाय से मैं अनेक बार लोगों को कुएँ के अन्दर से बाहर निकाल चुका हूँ। देखो मेरी बुद्धिमानी का कमाल !"

यह कहकर उसने रस्सी खींची, वह व्यक्ति धड़ाम से वृक्ष पर से नीचे गिरा और मर गया।

रॉबर्टू ने दिल में कहा—

'अब मुझे विश्वास हो गया, मेरी पत्नी सबसे बड़ी मूर्ख नहीं है। वह महामूर्ख नहीं है। उससे बड़े-बड़े मूर्ख इस संसार में मिल जाएँगे।'



हंस सुन्दरी

न जाने किस समय की बात है, किसी नगर में एक किसान रहता था। उसके तीन बेटे थे। दो बड़े बेटे उसके साथ दिन-भर खेत पर पसीना बहाते थे लेकिन छोटे लड़के को इस कार्य में तनिक भी रुचि नहीं थी।

यही कारण था कि वह दोनों बड़े बेटों को बहुत चाहता था।

"मेरे घर का सारा सुख मेरे बड़े बेटों की मेहनत का ही फल है," वह बड़े गर्व से कहा करता था।

जब लोग पूछते, "और जॉन ?"

इस प्रश्न के उत्तर में वह केवल बुरा-सा मुँह बना देता था।

इसका भी कारण था।

जॉन बड़े भाइयों से बिल्कुल ही भिन्न था। वह खेत पर कभी नहीं जाता था और न ही उसे खेती की कोई जानकारी थी। उसे खेती में रुचि तनिक भी नहीं थी। उसे तो केवल सपने देखना अच्छा लगता था—सपने, जो जागते में देखे जाते हैं।

जाड़ों की बर्फ़ जैसी ठंडी रातों में जब धरती बर्फ़ से ढँकी होती और बर्फ़ीली हवाएँ साँय-साँय करतीं—तो वह आग के निकट बैठकर खुली आँखों से सपने देखने लगता—उन परियों के सपने जो परीलोक से रात के सन्नाटे में धरती पर नाचने चली आती हैं और सूर्य उदय होने से पहले ही परीलोक को लौट जाती हैं। उन्हें कोई भी नहीं देख पाता क्योंकि वे उस समय आती हैं जब संसार गहरी नींद में डूबा होता है।

इन परियों को केवल बालक ही देख सकते हैं—और वह भी केवल सपनों में।

जॉन को 'जागते सपने' बहुत भाते थे। उसका मन करता था कि

वह सारा जीवन सपने देखने में ही बिता दे।

उसे पुरानी कथाएँ और लोकगीत भी बहुत भाते थे। जहाँ कहीं भी कथाएँ और गीत सुनाए जाते, वह घंटों-घंटों बैठा चुपचाप सुनता रहता। खाने-पीने का भी होश न रहता।

पिता बिगड़कर कहता ही रहता—

"यह जॉन तो किसी काम का नहीं है। यह आलसी और कामचोर है। काश, यह भी बड़े भाइयों जैसा ही मेहनती होता और मेरा सहारा बनता ! जॉन एक ऐसे वृक्ष के समान है जो न छाया देता है और न फल। मैं तो यही समझता हूँ कि मेरे केवल दो ही बेटे हैं, तीसरे का तो होना या न होना बराबर है।"

एक दिन सवेरे ही सवेरे किसान खेत पर गया जिसमें फ़सल पककर कटने के लिए तैयार खड़ी थी।

परन्तु वहाँ जाकर उसने जो देखा, उससे उसके मन को बड़ी चोट लगी। खेत के एक भाग में फ़सल कुचली पड़ी थी।

'यहाँ कोई रात में आया था !' उसने मन में कहा।

परन्तु कौन ?

इस प्रश्न का उत्तर उसके पास न था।

वह बड़बड़ाया—

"मेरा कौन ऐसा शत्रु है जो खेत के इस भाग को उजाड़ गया है ? ऐसा तो आज तक नहीं हुआ था !"

वह उसी उलझन में घर आया और सिर पकड़कर बैठ गया।

सबसे बड़ा बेटा घर में था।

उसने पिता को परेशान देखकर पूछा, "क्या बात है ? क्या हुआ ?"

वह बोला—

"ऐ बेटा, एक दुर्घटना ने मुझे दुखी कर दिया है।"

बेटे ने आश्चर्य से पूछा—

"कैसी दुर्घटना ? कहाँ हुई ? कब हुई ?"

उसने बताया—

"बेटा, अभी मैं खेत पर गया तो देखा, एक भाग की फ़सल किसी



ने कुचल दी है।''

''किसने ?'' बेटे ने प्रश्न किया।

किसान ने उसकी ओर देखते हुए कहा—

''तुम्हें इसका पता लगाना है। मैं जानना चाहता हूँ, यह किसी शत्रु का काम है या किसी ने यूँ ही शरारत की है ?''

बेटा उसकी बात सुनकर बोला—

''यह कौन-सा कठिन काम है ! आप चिन्ता न करें। मैं आज रात खेत पर ही बिताऊँगा और कल सवेरे आपको बता दूँगा कि यह किसने किया है। हो सका तो मैं अपराधी को ही पकड़ लाऊँगा।''

जब रात हुई तो वह खेत पर जाकर एक ओर घास के एक ढेर पर जाकर बैठ गया। आकाश पर तारों के दीपक जल उठे थे। रात ने संसार पर अपना काला आँचल फैला दिया था। वह विचारों में खोया हुआ था—

' न जाने यह किसकी शरारत है ! हमारा तो कोई ऐसा शत्रु भी नहीं है, फिर कोई क्यों ऐसा कर गया ? और यह भी आवश्यक नहीं कि वह आज भी आए ! मैं उसे छोड़ूँगा नहीं। उसे पकड़कर घर ले जाऊँगा और सबके सामने ऐसा मज़ा चखाऊँगा कि वह भी याद रखेगा।

‘ परन्तु वह है कौन–कोई मानव ? कोई पशु ? कोई आत्मा ?

‘ मानव और पशु को पकड़ना तो सरल काम है–परन्तु अगर वह कोई भूत हुआ तो मैं क्या करूँगा ? चलो, कोई बात नहीं। कम-से-कम पता तो चल जाएगा कि अपराधी है कौन !’

उसकी आँखों में नींद भरने लगी।

वह सोच रहा था–

‘ अगर मैंने पता लगा लिया तो पिताजी कितने ख़ुश हो जाएँगे ! सारे नगर में मेरी धूम मच जाएगी।

‘ बस, एक ही रात की तो बात है। क्या मैं एक रात भी जाग नहीं सकता ? यह समय तो चुटकी बजाते में बीत जाएगा।

‘ बस–मुझे सोना...नहीं चाहिए...अगर मैं सो गया...तो अच्छा नहीं होगा...जागते रहने ही से मैं...उस...अप...रा...धी...क...को...प...कड़...स ...स...सक...सकता...’

अचानक वह हड़बड़ाकर उठ बैठा।

यह क्या ?

आकाश पर सूर्य का प्रकाश फैला हुआ था। वह घास के ढेर पर सो गया था–सारी रात सोता रहा था।

उसने घबराकर खेत पर नज़र दौड़ाई–और ठंडी दुखभरी साँस भरी। खेत के दूसरे भाग में फसल को किसी ने फिर कुचल दिया था।

अब भला क्या हो सकता था !

वह मुँह लटकाए घर पहुँचा।

“तुम तो अकेले ही आ रहे हो,” पिता ने उसे देखकर कहा, “ऐसा लगता है, जैसे रात को खेत पर कोई नहीं आया, नहीं तो तुम अपराधी को भी लाते; परन्तु तुम्हारा मुँह किस कारण लटका हुआ है ?”

उसने कहा, “मुझे खेत पर नींद आ गई थी। जब सवेरे आँख खुली तो देखा, खेत का एक और भाग कुचला पड़ा था। मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ।”

पिता बिगड़कर बोला, “तुम निकम्मे हो। इतना-सा काम नहीं कर सकते ? मेरी फ़सल का एक और भाग नष्ट कर दिया गया और तुम सोते रहे ! अब अपराधी कैसे पकड़ा जाएगा ?”

दूसरा भाई जो वहीं खड़ा था, बोल उठा—

"एक अवसर मुझे भी दीजिए। मैं अवश्य ही अपराधी का पता लगा लूँगा।"

पिता ने सिर हिलाकर कहा, "ठीक है, तुम भी अपना प्रयास करके देख लो।"

वह भी रात को खेत पर जा पहुँचा। वह अपने साथ खाने-पीने को बहुत कुछ लाया था।

खेत पर पहुँचकर वह एक वृक्ष के तने से टेक लगाकर बैठ गया और खाने की बास्केट सामने रख ली।

तारों भरे आकाश की ओर देखकर वह बड़बड़ाया—'मेरा भाई मूर्ख था जो एक रात भी न जाग सका। मैं जागने का उपाय जानता हूँ। बस, मैं खाने में मग्न रहूँगा और मेरे मन में सोने का विचार ही नहीं आएगा। जागते रहना भी कोई कठिन काम है ! बस, खाते रहो। हाथ और मुँह चलते रहें तो कैसे आँख लग सकती है ?'

वह खाता रहा और सोचता रहा—

'बस, मैं खाता रहूँगा—सवेरे तक...और...न...नीं...नींद...को तो...तो ...पास भ...भ...भी...नहीं आने दूँगा...भला नींद...मेरे...पास...अ...आ... आकर देखे...मैं...बड़े भाई...के...जै...जैसा...म...मूर्ख...नहीं हूँ...मैं...र...रा ...रात...भर...ज...जा...जाग...जागता...र-र-रहूँगा...और दुष्ट...अपरा ...धी...सवेरे...अपराधी...प...पकड़... !'

शायद कोई कुत्ता उसके कान के पास ही भौंक रहा था।

उसने आँखें खोल दीं। दिन निकल आया था।

"यह क्या हुआ ?" वह आश्चर्य से चिल्लाया, "मैं तो जाग रहा था ! फिर मुझे नींद कब आ गई ?"

उसने झपटकर खेत का निरीक्षण किया—और सिर पीट लिया।

खेत के एक और भाग में फ़सल कुचली पड़ी थी।

बहुत समय तक वह खड़ा सोचता रहा—

'अब क्या हो ? पिता के पास कौन-सा मुँह लेकर जाऊँ ?'

धीरे-धीरे चलता हुआ वह घर आया। पिता ने तुरन्त ही भाँप लिया कि वह भी असफल रहा था।

"पिताजी !" उसने कहा, "मैं खा-खाकर जागता रहा..."

पिता उसकी बात को काटकर बोला, "और जब आँख खुली तो फसल फिर कुचली हुई मिली ! शर्म नहीं आती ! इतना-सा काम नहीं हो सका तुमसे ! तुम सब मूर्ख हो। तुमने मुझे निराश किया है।"

उस समय जॉन भी वहीं खड़ा था।

पिता को भाई पर बिगड़ता देखकर कहने लगा–

"पिताजी, इस बार मुझे यह कार्य सौंप दीजिए। जो काम मेरे भाई नहीं कर सके, हो सकता है, मैं उसे करने में सफल हो जाऊँ !"

पिता ने उसकी बात सुनी तो झल्लाकर बोला–

"जहाँ तुम्हारे बड़े भाई असफल हो गए, वहाँ तुम कौन-सा तीर मार लोगे ? क्या तुम आलसी और निकम्मे नहीं हो ? क्या तुमने कभी कोई काम किया है ?"

"फिर भी मुझे एक अवसर तो दे ही दीजिए," जॉन ने कहा, "संभव है, मैं यह कार्य कर ही डालूँ।"

"जाओ, तुम भी आज की रात खेत पर बिताकर देख लो," पिता मुँह बनाकर बोला, "वैसे मुझे तुमसे कोई आशा नहीं है।"

जॉन विचार करने लगा कि उसे क्या करना चाहिए।

'खेत पर किसी प्रकार का शस्त्र ले जाना तो बेकार ही है,' उसने मन में कहा, 'क्योंकि यह भूतों ही का काम लगता है, और भूतों से शस्त्रों से नहीं लड़ा जा सकता।'

अचानक उसके मन में विचार आया–

'मुझे केवल जागते रहना है–और मैं उसी समय तक जागता रह सकता हूँ जब तक मुझे नींद न आए। रात को जागते रहने के लिए मुझे दिन में सोना होगा।'

उसने वैसा ही किया। सवेरे से शाम तक वह सोता ही रहा।

शाम होने पर वह उठा और खेत की ओर चल दिया।

खेत पर सन्नाटा छाया हुआ था। वह एक झाड़ी में खड़ा हो गया।

जागते रहने के लिए खड़ा रहना आवश्यक था। लेटने या बैठने से नींद उसे दबा सकती थी।

रात बीतती रही। उस रात ठंडक भी बहुत थी और यह उसके लिए

अच्छा ही हुआ। ठंडी हवा के झोंकों ने उसे सोने न दिया।

आधी रात भी बीत गई। खेत वैसा ही सुनसान पड़ा था।

और फिर तड़का हो गया। तड़का वह समय होता है जब रात और दिन की सीमाएँ मिलती हैं और सोने वालों की नींद सबसे गहरी होती है। रात-भर जागते रहने वाला भी इसी समय नींद की लपेट में आ जाता है।

उसकी पलकें भी झुकी जा रही थीं। नींद के झोंके उस पर बार-बार वार कर रहे थे।

"मुझे जागते रहना चाहिए," वह बड़बड़ा रहा था, "थोड़ी देर में सवेरा होने ही वाला है। अगर आँख झपक गई तो सारी रात की मेहनत बेकार जाएगी।"

सवेरा दूर नहीं था। दूर आकाश में 'सुबह का तारा' जगमगा रहा था। पूर्व की ओर दूध जैसी सफ़ेदी झलकने लगी थी।

अचानक उसने पंखों की सरसराहट सुनी और मुँह उठाकर देखा–सात हंस उड़ते हुए आए और खेत में उतर गए।

उनके पंख बर्फ़ जैसे सफ़ेद थे।

'ओह ! ये तो केवल पक्षी हैं !' उसने सोचा, 'ये फ़सल को नहीं कुचल सकते। अब तो दिन निकल ही रहा है। आज की रात खेत में कोई आया ही नहीं।'

परन्तु दूसरे ही क्षण उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं।

उन सातों ने हंस की खाल उतारकर नीचे रख दी थी–और अब वहाँ सात सुन्दरियाँ खड़ी थीं–नीली आँखों और लाल होंठों वाली, जिनके सुनहरे बाल हवा में लहरा रहे थे।

वे सब एकसाथ खिलखिलाकर हँस पड़ीं, जैसे जलतरंग बज उठे हों !

वे मानवों की भाषा में बातें करने लगीं–

"आज हमें यहाँ आने में देर हो गई।"

"और सूर्य के आकाश में ऊपर आने के बाद हम यहाँ नहीं रह सकतीं। चलो, जल्दी से थोड़ा-सा नाच लें।"

और वे सातों खेत के उस भाग में उछलने-कूदने और नाचने

लगीं। उनके पैर फ़सल को कुचल रहे थे।

उनमें से एक तो बहुत ही सुन्दर थी। ऐसा लगता था जैसे कोई सुन्दर सपना मानव बन गया हो !



उसे ऐसा लगा, जैसे वह उसके बिना न रह सकेगा।

'काश, यह मेरे साथ रह सकती !' उसके मन ने कहा। परन्तु वह तो फिर उड़कर चली जाएगी नीले आकाश की ओर। उसे रोकने का केवल एक ही उपाय था कि वह उस सुन्दरी की पक्षी की खाल छुपा देता। खाल पहने बिना वह उड़कर वापस नहीं जा सकती थी।

और उसकी खाल उसी झाड़ी के पास ही रखी थी जिसमें वह छुपा खड़ा था। उसने हाथ बढ़ाकर खाल उठा ली और चुपके से उसे घास के ढेर में छुपा दिया। उन सातों ने नाचना-कूदना बन्द करके कहा, ''अब हमें चलना चाहिए—सूर्य आकाश में ऊपर आने ही वाला है। अगर किसी ने हमारा भेद पा लिया तो हम कठिनाई में पड़ जाएँगी। जल्दी करो और खालें पहन लो।''

वे जल्दी-जल्दी खालें पहनने लगीं।

''अरे, मेरी खाल कहाँ गई ?'' वह सुन्दरी चिल्लाई, ''यहीं तो रखी थी ! यहाँ से कहाँ चली गई ?''

वे सब मिलकर उसकी खाल को इधर-उधर खोजने लगीं; परन्तु उसका कहीं पता न था।

वह सुन्दरी हाथ मलकर कह रही थी, "मैं क्या करूँ ? अब क्या होगा ? खाल के बिना मैं कैसे जाऊँगी ?"

उसकी सखियाँ बोलीं—

"अब हम नहीं ठहर सकतीं। हम जा रही हैं।"

और वे पंख फैलाकर देखते ही देखते आकाश में ऊपर, और ऊपर उड़ती हुई आँखों से ओझल हो गईं।

वह उन्हें बेबसी से देखती रही। उसका दिल भर आया और आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई।

"अब मैं क्या करूँ ?" वह चिल्लाई, "मैं अपने देश कभी नहीं जा सकूँगी।"

जॉन झाड़ी में से सब कुछ देख रहा था। जब वह अकेली खड़ी रह गई तो वह झाड़ी से निकला और उसकी ओर चला।

जॉन के पगों की आहट सुनकर वह उसकी ओर मुड़कर बोली, "तो क्या तुमने ही मेरी खाल कहीं छुपा दी है ? मुझ पर दया करो—उस खाल के बिना मैं नीले आकाश में उड़ नहीं सकती। मुझे वह खाल लौटा दो। मुझे सताकर तुम्हें क्या मिलेगा ?"

जॉन ने पास आकर कहा—

"तुम यह क्यों समझती हो कि मैं तुम्हें सताना चाहता हूँ ? सच तो यह है कि मैं तुम्हें देखकर होश खो बैठा हूँ। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। मैं नहीं चाहता कि तुम यहाँ से जाओ। इसी कारण मैंने खाल को छुपाया है। क्या तुम मेरे प्यार को स्वीकार करोगी ? क्या तुम मेरे साथ रहोगी ? मैं तुम्हें संसार के सब सुख दूँगा।"

उसकी बात सुनकर वह बोली—

"तुम मुझे दुख पहुँचाकर मेरा प्यार प्राप्त करना चाहते हो ? क्या तुम नहीं जानते कि मैं मानव नहीं हूँ ? मैं तुम्हारे संसार में किस प्रकार सुखी रह सकती हूँ ? तुम मेरी खाल चुराकर किस प्रकार मेरा मन जीत सकते हो ?"

जॉन बोला—

"मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता।"

उसने कहा—

"मैं तुम्हारे संसार में नहीं रह सकती। अब केवल एक ही रास्ता है—और वह यह कि मैं तुम्हें अपने संसार में ले चलूँ, परन्तु यह उचित नहीं होगा कि मैं तुम्हें सम्बन्धियों और मित्रों से छुड़ाकर एक नए संसार में ले चलूँ। क्या वहाँ जाकर तुम्हें अपने संसार की याद नहीं आएगी ? क्या तुम्हारा दिल नहीं घबराएगा ? नहीं-नहीं, मुझसे यह अत्याचार नहीं किया जाएगा ! मुझे जाने दो ! तुम्हारा यह उपकार मुझे सदा याद रहेगा।"

जॉन ने उसकी आँखों में झाँका। वह समझ गया, वह भी उससे प्यार करने लगी है। जॉन ने साफ़-साफ़ कह दिया—

"अब तो हम साथ ही रहेंगे—मेरे संसार में, या तुम्हारे संसार में। मैं तुम्हें अकेले नहीं जाने दूँगा। मुझे भी साथ ले चलो।"

"ठीक है," वह बोली, "शायद मैं भी तुम्हारे बिना न रह सकूँ। तुम चलने के लिए तैयार हो जाओ।"

सबसे पहले जॉन ने उसकी खाल उसे लौटा दी।

उसने जॉन की उँगली में एक अँगूठी पहनाते हुए कहा, "मेरे प्यार की यह निशानी अपने पास रखना।"

फिर उसने जॉन को घास पर लिटाकर आँखें बन्द करने को कहा—और एक जादुई गीत गाने लगी—

"ऐ मेरे प्यारे !
हम प्यार की डोर से बँधे हैं
हंसों के जोड़े के समान।
चल, मैं तुझे ले चलूँ—यहाँ से दूर—
उस संसार में जहाँ कोई दुख नहीं,
जहाँ फूल ही फूल हैं
जहाँ तितलियों जैसी रंगीन परियाँ
हवा में उड़ती फिरती हैं
जहाँ झरने जलतरंग बजाते हैं।"

गीत के जादू ने उसे गहरी नींद सुला दिया।

जब आँख खुली तो वह चौंक पड़ा। वह फूलों के ढेर पर लेटा था। चारों ओर फूल ही फूल थे—नीले, पीले, लाल, हरे, ऊदे—जिनकी सुगन्ध



हवा में बसी हुई थी। वातावरण में धीमा-धीमा संगीत गूँज रहा था। आकाश में अनेक आकाश-गंगाएँ बिखरी पड़ी थीं।

और उसके सामने वही सुन्दरी अपनी भरपूर सुन्दरता के साथ खड़ी मुस्कुरा रही थी।

"अपने देश में मैं तुम्हारा स्वागत करती हूँ।" वह मीठी आवाज़ में बोली।

वह उठ बैठा।

दोनों ने एक-दूसरे के हाथ थाम लिए। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे वह हलका हो गया हो—तितली के पंख जैसा, और उसका मन खुशी का अथाह सागर बन गया था।

वह उसे मोतियों से बने एक महल में ले गई।

दोनों साथ रहने लगे। उनके जीवन में सुख ही सुख था।

इसी प्रकार रहते-रहते तीन वर्ष बीत गए।

एक दिन जॉन को चुप देखकर वह बोली—

"मुझे ऐसा लगता है कि तुम यहाँ पर दुखी हो। बताओ, इसका क्या कारण है ? ऐसा कौन-सा सुख है जो मैं तुम्हें नहीं दे सकी ?"

उसने ठंडी साँस भरकर कहा—

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। तुम चिन्ता न करो।"

परन्तु उसकी उदासी बढ़ती ही गई। खाने-पीने में भी रुचि न रही।

"कुछ तो बताओ, तुम्हारे मन में क्या है ?" उसने फिर पूछा।

जॉन ने उत्तर दिया—

"बात यह है कि मुझे घर की याद सता रही है। अगर मैं केवल एक बार ही वहाँ हो आऊँ तो मेरा दुख दूर हो जाएगा।"

वह बोली—

"कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम्हारे मन में मेरे लिए पहले जैसा प्यार न रहा हो ?"

"नहीं," जॉन ने कहा, "तुम्हारे लिए तो प्यार बढ़ा है, घटा नहीं। बस, घर की याद ने दुखी कर रखा है।"

जॉन की बात ने उसके मन को चोट पहुँचाई थी। वह यह भी समझती थी कि अगर उसने उसकी बात न मानी तो वह और भी दुखी हो जाएगा।

कुछ समय तक सोचने के बाद वह बोली—

"मैं तुम्हें दुखी नहीं देख सकती। अगर तुम्हारी इच्छा है तो फिर मैं तुम्हें नहीं रोक सकती। तुमसे एक विनती है—मेरी बातों को ध्यान से सुनो।

"जब भी तुम्हें मेरी आवश्यकता हो, उसी स्थान पर, जहाँ तुमने मुझे खेत में खड़ा देखा था, खड़े होकर मुझे आवाज़ देना। मैं आ जाऊँगी। परन्तु सावधान ! मुझे बिना कारण के कभी न बुलाना। याद रखो, तुम्हारे संसार में मेरा आना बहुत अच्छी बात नहीं है।"

जॉन ने उसकी बात ध्यान से सुनी और वचन दिया कि वह वैसा ही करेगा।

फिर उसने जॉन को लेट जाने को कहा और वह कुछ मंत्र पढ़ने लगी। वह गहरी नींद सो गया।

जब आँख खुली तो देखा, वह अपने खेत पर ही सो रहा था। उसके शरीर पर सोने के तारों से बना हुआ लिबास था।

वह उठकर घर की ओर चला और द्वार के पास खड़ा हो गया। द्वार बन्द था, परन्तु अन्दर से पिता के बोलने की आवाज़ आ रही थी।

सुन्दरी ने उसके कान में कहा था—'देखो, मेरे और अपने प्यार का

भेद किसी को न बताना।'

उसने द्वार खटखटाया। द्वार खुला तो देखा, उसका परिवार भोजन कर रहा था—माता-पिता, दोनों भाई और उनकी पत्नियाँ।

उसे कोई भी न पहचान पाया था। पिता के पूछने पर उसने बताया कि वह एक यात्री है और घोड़े के मर जाने के कारण इधर-उधर भटकता फिर रहा है।

पिता ने उसका स्वागत किया और कहा, "तुम हमारे मेहमान हो, जब तक जी चाहे यहाँ रहो।"

उसके सामने स्वादिष्ट भोजन रखा गया जिसे उसने पेट भरकर खाया।

उसने देखा, उसके भाई की पत्नी, जिसका नाम 'थोरगर्ड' था, उसकी ओर देखकर मुस्कुरा रही थी।

उसने यह भी देखा कि उसकी माता भी उसकी ओर ध्यान से देख रही थी। शायद माँ को उसकी सुनाई हुई कहानी पर विश्वास नहीं हुआ था।

जिस कमरे में जॉन को ठहरना था, उसमें माँ ने उसका मनपसन्द भोजन एक थाली में रख दिया और छुपकर देखने लगी।

वह पेट भरा होने पर भी उस भोजन को चट कर गया। माँ ने सामने आकर कहा, "तू मेरा बेटा जॉन है।"

"हाँ, माँ !" वह बोला और माँ से लिपट गया।

घर में सबको पता चल गया कि वह छोटा लड़का था। उसने यही बताया कि वह व्यापारियों के एक जहाज़ में विदेश चला गया था। अभी वह थोड़े समय के लिए ही आया था और उसे जल्द ही वापस जाना था।

यह सुनकर माँ उदास हो गई।

"जितनी खुशी तेरे आने से हुई है, उससे कहीं अधिक इस बात का दुख है कि तुझे वापस जाना है।"

उसने कहा, "मैं मजबूर हूँ, मुझे जाना ही है।"

कुछ दिनों के बाद उसे उस सुन्दरी की याद सताने लगी। उसका दिल घबराने लगा और वह हर समय खोया-खोया-सा रहने लगा। घर

और नगर से बाहर निकलकर वह सारा दिन वीरानों में इधर-उधर भटकता रहता।

कभी-कभी वह रातों को भी अपने खेत में जाकर घूमता रहता। ऐसा भी होता था कि वह सूर्य उदय तक घर वापस नहीं आता था।

वह अपने मन की बात किसी से कह भी नहीं सकता था क्योंकि सुन्दरी ने उसे चेतावनी दी थी कि वह किसी को भी अपनी कहानी न सुनाए।

वह सुन्दरी के विषय में दिन-रात सोचता रहता था। उसे यह पता नहीं था कि थोरगर्ड रातों को उसका पीछा किया करती थी। वह जानना चाहती थी कि वह इतने समय कहाँ रहा था ? अब कहाँ जाना चाहता था ? रातों को क्यों मारा-मारा फिरता था ?

बहुत समय तक उसे जॉन के भेद का पता न चल सका।

एक रात—जो कि 'क्रिस्मस' की रात थी, धरती बर्फ़ से ढँकी हुई थी। सड़कें, घरों की छतें, वृक्ष—सब पर बर्फ़ ही बर्फ़ थी। ऐसा लगता था कि बर्फ़ का कोई बड़ा तूफ़ान आने वाला था।

वह नगर से बाहर निकलकर खेत पर आ गया और ज़ोर से चिल्लाया, "ऐ सुन्दरी ! मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। अब तो तुम चली आओ ताकि मेरे मन को चैन मिले। क्या मेरी आवाज़ तुम तक पहुँच रही है ?"

अचानक उसने आँखें मलकर देखा—खेत पर उसी स्थान पर जहाँ उसने सुन्दरी को देखा था, कोई गाउन में लिपटा खड़ा था।

वह खुशी से चिल्लाया—

"मुझे विश्वास नहीं था कि मेरी आवाज़ सुनते ही तुम आ जाओगी। तुम्हारा वचन सच्चा था। तुमसे दूर होकर मैं बड़ा दुखी रहा हूँ।"

वह चुप खड़ी थी।

जॉन ने पास आकर कहा—

"तुम कुछ बोलती क्यों नहीं हो ? क्या तुम्हें कुछ कहना नहीं है ?"

अब उसने उसके चेहरे को देखा—और आश्चर्य से चिल्ला उठा—

"यह तुम हो ?"

उसके सामने सुन्दरी नहीं, थोरगर्ड खड़ी थी।

"हाँ, यह मैं हूँ।" वह बोली।

"तुम यहाँ क्या कर रही हो ?" जॉन ने झल्लाकर कहा।

"और तुम यहाँ किसे बुला रहे थे ?" उसने प्रश्न किया, "कौन है जिससे दूर होकर तुम दुखी हो ? मैं यही भेद जानना चाहती हूँ।"

जॉन ने कोई उत्तर नहीं दिया और वह घर वापस चला आया। थोरगर्ड भी चली आई। दोनों ही चुप थे। जॉन को दुख था क्योंकि सुन्दरी नहीं आई थी।

घर में सब लोग रात के भोजन पर बैठे और बातें करते-करते बहुत रात बीत गई—शायद आधी रात बीत गई थी।

अचानक किसी ने द्वार खटखटाया।

सब ही चौंक पड़े। जॉन के पिता और भाइयों ने तलवारें निकाल लीं क्योंकि आधी रात को आने वाला कोई लुटेरा भी हो सकता था !

वे द्वार की ओर आए और पुकारे—

"कौन है ?"

"द्वार खोलो !" आवाज़ आई—किसी स्त्री की मीठी आवाज़ !

आधी रात को किसी स्त्री का वहाँ भला क्या काम हो सकता था ?

पिता ने सावधानी से द्वार खोला—और सबकी आँखें आश्चर्य से फैल गईं। उनके सामने एक बड़ी ही सुन्दर स्त्री हंस के पंखों जैसे सफ़ेद वस्त्र पहने खड़ी थी।

जॉन के मुँह से निकला, "तुम !"

और उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा।

वह बोली—

"जॉन, तुमने मुझे बुलाया और मैं आ गई। क्या तुमने मुझे पहचाना नहीं ?"

जॉन ने अपने परिवार के सदस्यों से उसका परिचय कराया और कहा—

"यही मेरी पत्नी है जो मुझे खोजती हुई यहाँ तक आ पहुँची है।"

सबने उसे देखा और उसकी सुन्दरता से प्रभावित हुए। वह तो



राजकुमारी जैसी लग रही थी !

अचानक जॉन के मन में कोई विचार आ गया—और वह दुखी हो गया।

"क्या बात है ?" सुन्दरी ने पूछा, "क्या मेरे आने से तुम खुश नहीं हो ?"

जॉन बोला—

"मुझे याद आ रहा है, तुमने मुझसे कहा था कि मेरे संसार में आना तुम्हारे लिए कोई अच्छी बात नहीं होगी।"

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी और फिर बोली, "जब तक मैं यहाँ हूँ तब तक तो मन से चिन्ता को दूर कर दो।"

उस रात जब वह गहरी नींद सो गया तो वह चुपके से उठी और धीरे से बोली—

"ऐ मेरे प्यारे ! तुम्हारे कारण मैं संकट में पड़ गई हूँ। मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हारे संसार में आना मेरे लिए अच्छा नहीं है। अब मैं जा रही हूँ—उस देश में जो सूर्य के पूर्व में और चाँद के पश्चिम में है।

परन्तु तुम तो सो रहे हो। काश, तुम मेरी आवाज़ सुन सकते ! कल सवेरे जब तुम उठोगे तो मुझे न पाकर तुम्हें बड़ा दुख होगा और तुम्हें यह भी पता न होगा कि मैं कहाँ गई हूँ। मैं यहाँ नहीं ठहर सकती, मैं मजबूर हूँ। मुझे क्षमा कर देना।"

यह कहकर वह घर से बाहर आई और बर्फ़ की तूफ़ानी रात में अँधेरे में गुम हो गई।

सवेरे जब जॉन की आँख खुली तो सुन्दरी का ध्यान आया।

वह झट से उठा और उसे घर में ढूँढ़ने लगा।

उसका कहीं पता नहीं था।

उसने सबसे पूछा, "वह कहाँ गई ?"

सबने एक ही उत्तर दिया, "हमें पता नहीं।"

वह झपटकर बाहर गया, परन्तु उसके पैरों के निशान अब कहाँ थे ? बर्फ़ अब भी गिर रही थी। चारों ओर बर्फ़ का सागर-सा दिखाई दे रहा था।

वह पागलों के समान सबसे बार-बार यही पूछ रहा था—

"वह कहाँ गई ? वह कहाँ गई ?"

इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास न था।

अचानक उसे कुछ याद आया, जैसे वह किसी स्वप्न को याद कर रहा हो ! वह कोई भूला हुआ स्वप्न था—धुँधला-सा...अधूरा !

उस सपने में उसने एक आवाज़ सुनी थी—

'उस देश में जो सूर्य के पूर्व में और चाँद के पश्चिम में है...!'

वह कैसी आवाज़ थी ?

क्या वह स्वप्न था ?

"सूर्य के पूर्व में—चाँद के पश्चिम में," वह बड़बड़ाया, "ये शब्द मुझे क्यों याद आ रहे हैं ? क्या रहस्य है इनका ? हो सकता है, यह केवल स्वप्न न हो !"

फिर उसने निश्चय किया—"कुछ भी हो, मैं अवश्य ही जाऊँगा और उस देश को ढूँढ़ निकालूँगा। अगर मैं वहाँ न पहुँच सका तो उसकी खोज करते-करते मैं प्राण खो दूँगा। उसके बिना जीने में मज़ा नहीं है।"

और वह चल पड़ा। नगर-नगर घूमते हुए वह एक नगर पहुँचा जो समुद्र के तट पर बसा हुआ था।

जिस दिन वह वहाँ पहुँचा, एक जहाज़ एक लम्बी यात्रा पर जाने के लिए तैयार था। वह जहाज़ पर चढ़ गया और जहाज़ ने लंगर उठा लिया।

कई दिनों तक जहाज़ समुद्र में आगे बढ़ता रहा।

एक दिन दूर समुद्र में सफ़ेद बादल-सा दिखाई दिया। कप्तान उसे देखकर घबरा गया।

"सावधान !" कप्तान चिल्लाया, "भयंकर तूफ़ान आ रहा है !"

तूफ़ान भयंकर ही था। काले बादलों ने आकाश को ढँक लिया। भारी वर्षा होने लगी, तेज़ हवा चलने लगी।

समुद्र में पहाड़ों जैसी ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगीं। जहाज़ उन पर डोलने लगा।

लहरें बार-बार जहाज़ पर धावा बोल रही थीं। जहाज़ में पानी भरने लगा। लोग घबराकर इधर-उधर भागने लगे।

कप्तान अपने बाल नोचकर चिल्लाया, "जब जहाज़ को कोई नहीं

बचा सकता। जहाज़ डूबने ही वाला है।"

अचानक जहाज़ उलटने लगा। यात्री समुद्र में गिरने लगे।

जॉन भी समुद्र में डुबकियाँ खाने लगा।

डूबते समय उसके मन में केवल सुन्दरी का ही विचार था।

—अरे, यह क्या ?

उसकी आँखों के सामने वही सुन्दरी खड़ी मुस्कुरा रही थी।

नहीं, नहीं—वह सुन्दरी नहीं, सुन्दरी की कल्पना थी। उसने चारों ओर देखा—वह किसी द्वीप पर पड़ा था। द्वीप सुन्दर था जिस पर पहाड़ और जंगल थे।

अब उसे याद आया—तूफ़ान आने से पहले उसने समुद्र में एक ओर सूर्य को डूबते और दूसरी ओर चाँद को निकलते देखा था—और मन ही मन कहा था—'सूर्य और चाँद—पूर्व और पश्चिम ! मुझे विश्वास है, वह मुझे अवश्य ही मिलेगी। अगर ऐसा न होता तो मैं समुद्र में डूब गया होता।'

वह उठा, वृक्षों पर से फल तोड़कर खाए, चश्मे का ठंडा पानी पिया और पहाड़ पर चढ़कर दूसरी ओर एक हरी-भरी घाटी को देखा। आकाश में सुबह का सूर्य ऊपर आ गया था और घाटी में धूप बिखरी थी। दूसरी ओर चाँद भी दिखाई दे रहा था जिसका मुखड़ा अब धुँधला पड़ता जा रहा था।

उसके मुँह से निकला—

"सूर्य के पूर्व और चाँद के पश्चिम में ! मैं अपनी मंज़िल तक आ गया हूँ। मुझे यहीं आना था।"

वह जल्दी-जल्दी घाटी में उतरने लगा। ऐसा लगता था, जैसे वह घाटी फूलों से भरी हो !

क्या वह परीलोक में आ गया था ?

घाटी के अन्दर वृक्षों के झुंड के बीच उसने एक महल को देखा। वह महल की ओर बढ़ने लगा।

मार्ग में उसने किसानों को खेतों में काम करते देखा, परन्तु शायद वे गूँगे और बहरे थे। उन्होंने उसकी ओर देखा तक नहीं। न ही उन्होंने उसकी कोई बात सुनी। एक चश्मे पर उसने लड़कियों को घड़ों में पानी

भरते देखा और एक को छूकर पूछा, "इस द्वीप का क्या काम है ?"

उन्होंने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। वह चलती-फिरती मूर्तियाँ थीं। महल के अन्दर उसने अनेक सिपाहियों और सेवकों को इधर-उधर जाते देखा।

उसने उन्हें पकड़-पकड़कर बात करनी चाही, परन्तु वे भी मूर्तियाँ ही थीं—जीवित मूर्तियाँ !

महल में उसने सुन्दर स्त्रियों को एक हाल में बैठे हुए देखा। उनमें वह सुन्दरी भी थी। वह मारे खुशी के चिल्ला उठा—

"मैंने तुम्हें पा ही लिया। तुम्हारे लिए मैंने बड़े दुख झेले हैं, अनेक संकटों का सामना किया है।"

सुन्दरी ने उसकी ओर देखा तक नहीं।

उसने उसका बाज़ू थामकर कहा—

"क्या तुमने मुझे पहचाना नहीं ? तुम मुझे छोड़कर चली आई थीं। आने से पहले तुमने मुझसे सपने में कहा था कि तुम उस देश में जा रही हो जो सूर्य के पूर्व में और चाँद के पश्चिम में है।"

उसके शब्द सुनते ही जैसे वह होश में आ गई।

"मैंने तुम्हें पहचान लिया," वह उसका हाथ थामकर बोली, "अब हम सदा साथ रहेंगे, हमें कोई अलग नहीं कर सकता।"

जादुई कुत्ते

वर्षों पुरानी बात है। एक सिपाही युद्ध के मैदान से थका-हारा घर लौट रहा था। उसके शरीर पर सिपाहियों के कपड़े थे, पैरों में लम्बे-लम्बे बूट, सिर पर टोपी और कमर से तलवार बँधी हुई थी। कंधे पर एक थैला था जिसमें कपड़े थे।

वह घने जंगल में चला जा रहा था—तेज़ पग उठाता हुआ। जंगल में वृक्षों के कारण दिन में भी अँधेरा-सा था।

वह मन-ही-मन सोचता चला आ रहा था—

'युद्ध ने मुझे थका दिया है। अब तो घर जाकर आराम करना है।'

अधिक समय तक आराम भी कहाँ संभव था ? कारण यह था कि उसकी जेब में केवल थोड़े-से सिक्के थे—वर्षों तलवार चलाने का वेतन ! उसे कुछ-न-कुछ काम तो करना ही था, नहीं तो उसे भूखों ही मरना पड़ता।

'चलो, कोई बात नहीं,' उसने अपने को समझा लिया, 'किसी के खेत पर ही मज़दूरी कर लूँगा। पेट तो भर ही जाएगा।'

वह इन्हीं विचारों में खोया हुआ चला जा रहा था कि एक आवाज़ उसके कानों में आई—

"ओ सिपाही !"

वह ठहरकर इधर-उधर देखने लगा।

उस जंगल में उसे पुकारने वाला भला कौन हो सकता था ?

'शायद मुझे धोखा हुआ है !' उसने सोचा और आगे बढ़ गया।

वही आवाज़ फिर आई—

"ओ सिपाही !"

रुककर उसने चारों ओर नज़रें दौड़ाईं, तो देखा, एक बूढ़ी स्त्री घनी

झाड़ियों में से निकलकर उसकी ओर चली आ रही थी। उसकी कमर झुकी हुई थी और चेहरा झुर्रियों से भरा हुआ था—किसी बंदर के चेहरे के समान।

वह लाठी टेकती हुई उसके पास आकर खड़ी हो गई।

उसने देखा—बूढ़ी के पैरों के पंजे पीछे की ओर मुड़े हुए थे, और एड़ियाँ आगे की ओर थीं।

वह समझ गया—बूढ़ी चुड़ैल थी। क्योंकि वह एक सिपाही था, इसलिए तनिक भी नहीं डरा।

बूढ़ी बोली, "युद्ध के मैदान से लौट रहे हो ! जेब में थोड़े-से ही सिक्के होंगे ?"

"तू क्या कहना चाहती है ?" सिपाही ने पूछा।

बूढ़ी ने ऊपर मुँह उठाकर कहा, "क्या तुम सिक्कों से जेबें भरना नहीं चाहोगे, सिपाही ?"

"क्यों नहीं !" सिपाही बोला, "परन्तु सिक्के मिलेंगे कहाँ ?"

बूढ़ी ने कहा—

" मैं सिक्कों का पता बता सकती हूँ। देखो, सामने वह बड़ा-सा वृक्ष देख रहे हो न, जिसका तना एक कमरे जितना बड़ा है ? वह खोखला है। उसमें एक बड़ा-सा छेद है।



" मैं तुम्हारी कमर में रस्सी बाँध दूँगी और तुम उस छेद के द्वारा नीचे उतर जाना।

" जब तुम नीचे जाओगे तो तुम्हें सामने ही एक कमरा दिखाई देगा जिसके पट ताँबे के हैं। उस पर ताँबे का ताला पड़ा है जिसमें ताँबे की चाबी लगी होगी। ताला खोलकर जब तुम अन्दर जाओगे तो वहाँ तुम्हें ताँबे का बड़ा-सा बक्स दिखाई देगा जिसके ऊपर ताँबे के रंग का एक भयंकर कुत्ता बैठा होगा। तुम डरना नहीं। मैं तुम्हें एक जादुई कपड़ा दूँगी। तुम कपड़े को फर्श पर बिछाकर कुत्ते को दोनों कानों से पकड़कर कपड़े पर बिठा देना। फिर तुम बक्स खोलना, जो ताँबे के सिक्कों से भरा हुआ है। जितने सिक्के चाहो, ले लेना।

" अगर तुम्हें चाँदी के सिक्के चाहिए तो तुम उसके बराबर वाले कमरे पर जाना जिसके चाँदी के पटों पर चाँदी का ताला और चाबी मिलेगी। उसके अन्दर चाँदी के बक्स पर चाँदी के रंग का कुत्ता दिखाई देगा। तुम उसे भी जादुई कपड़े पर बिठाकर बक्स में से जितने सिक्के चाहो, ले लेना।

" अगर तुम्हें सोने के सिक्कों की इच्छा हो तो तीसरे कमरे में जाना। उसके पट सोने के हैं जिस पर सोने का ताला है और सोने की ही चाबी है। उसके अन्दर सोने के बक्स पर सोने के रंग का कुत्ता बैठा होगा। तुम उसे भी उठाकर कपड़े पर रख देना और बक्स खोलकर जितना मन चाहे सिक्के ले लेना। "

बूढ़ी चुप हुई तो सिपाही ने पूछा–

"अब मुझे यह बता कि उन सिक्कों में से तुझे कितना भाग देना होगा ?"

बूढ़ी मक्कारी से मुस्कुराकर बोली–

"अरे बेटा, मैं सिक्कों का क्या करूँगी ! हाँ, मेरा एक छोटा-सा काम कर देना।"

"वह क्या ?"

"वहाँ एक कमरे में एक माचिस रखी है। बस, मेरे लिए उसे ही ले आना।" बूढ़ी ने कहा।

सिपाही को उसकी बात सुनकर आश्चर्य हुआ, परन्तु वह कुछ

बोला नहीं।

बूढ़ी ने उसकी कमर में रस्सी बाँध दी और वह खोखले तने के छेद में से होकर नीचे उतरने लगा। बूढ़ी का दिया हुआ जादुई कपड़ा उसने गर्दन पर बाँध रखा था।

न जाने कितना नीचे जाने के बाद उसके पैर धरती से जा लगे। वह धरती के अन्दर था—वृक्ष की जड़ के बहुत नीचे।

परन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि वहाँ अँधेरा नहीं था। वहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच सकता था, फिर भी वहाँ उजाला था।

सामने ही उसने एक कमरा देखा जिसके ताँबे के पट थे। उसमें ताँबे का ताला लटक रहा था और ताले में ताँबे की चाबी लगी हुई थी।

उसने ताला खोला और अन्दर गया तो बीच में ताँबे का एक बक्स देखा जिस पर ताँबे के रंग का एक भयंकर कुत्ता बैठा था।

कुत्ता उसको देखकर गुर्राया और उस पर झपटने को तैयार हुआ ही था कि उसने कपड़ा फ़र्श पर बिछाया और कुत्ते को कानों से पकड़कर उसे कपड़े पर बिठा दिया।

कुत्ता तुरन्त शान्त हो गया।

अब उसने बक्स खोला—जो ताँबे के लाल-लाल सिक्कों से मुँह तक भरा हुआ था।

उसने अपने थैले को ख़ाली करके उसे सिक्कों से भर लिया, फिर जूतों और टोपी में भी सिक्के भर लिए। जेबें सिक्कों से इतनी भर लीं कि उनके वज़न से चलना कठिन हो गया।

जब वह बाहर आया तो दूसरे कमरे के चाँदी के पट देखे।

चाँदी के ताले को चाँदी की चाबी से खोलकर वह अन्दर गया। वहाँ चाँदी के बक्स पर चाँदी के रंग का एक कुत्ता बैठा था, जो उस पर छलाँग लगाने ही वाला था कि उसने कपड़े को फ़र्श पर बिछाया और कुत्ते के कान पकड़कर उसे कपड़े पर बिठा दिया।

फिर उसने बक्स खोला—जो चाँदी के चमकदार सिक्कों से ठसाठस भरा हुआ था। चाँदी के सिक्कों को देखकर उसने ताँबे के सिक्कों को फेंक दिया।

चाँदी का मूल्य ताँबे से अधिक होता है।

उसने थैला, जेबें, जूते और टोपी—चाँदी के सिक्कों से भर लिए।

जैसे ही वह बाहर आया, उसे याद आया—

'यहाँ एक सोने का कमरा भी तो है !'

वह तीसरे कमरे की ओर मुड़ा।

सोने के पट पर सोने का ताला लटक रहा था जिसमें सोने की चाबी लगी हुई थी। वह ताला खोलकर अन्दर गया।

कमरे के बीच में सोने के एक बक्स पर सोने के रंग का कुत्ता बैठा था।

इससे पहले कि कुत्ता उस पर झपटता, उसने फ़र्श पर कपड़ा बिछाकर उस पर कुत्ते को बिठा दिया।

बक्स का ढक्कन खोलते ही उसकी आँखें चुँधिया गईं।

बक्स सोने के चमकदार सिक्कों से खचाखच भरा था—पीले-पीले झिलमिलाते सिक्के !

उसने चाँदी के सिक्कों को निकालकर फेंक दिया और उनके स्थान पर सोने के सिक्कों को भर लिया।

सोने का चाँदी से अधिक मूल्य होता है।

इतना ढेर-सा सोना पाकर वह बड़ा ही खुश था।

'वर्षों तक मैं मज़े करता रहूँगा,' उसने सोचा—'अब तो मुझे कोई काम करने की भी आवश्यकता नहीं है।'

वह ज़ोर से चिल्लाया—

"ओ बूढ़ी, मुझे ऊपर खींच ले !"

ऊपर से बूढ़ी की आवाज़ आई—

"धन मिल गया ?"

"हाँ।"

"और माचिस ?"

माचिस को तो वह भूल ही गया था।

ढूँढ़ने पर सोने के कमरे में ही एक धूल-भरी माचिस मिल गई।

उसने माचिस को उठा लिया और पुकारकर कहा—

"माचिस मिल गई है। अब मुझे खींच ले।"

कुछ ही क्षणों के बाद वह वृक्ष से बाहर बूढ़ी के सामने खड़ा था।

बूढ़ी ने पूछा–

"अब तो तुम धनवान हो ?"

"हाँ !" सिपाही ने उत्तर दिया।

"मैंने तुम्हें धनवान बना दिया है," बूढ़ी बोली, "लाओ, अब वह माचिस मुझे दे दो।" सिपाही उसे माचिस देने ही वाला था कि उसके मन में कोई विचार आया और उसने हाथ रोक लिया।

"तुम माचिस देते क्यों नहीं ?" बूढ़ी ने पूछा।

सिपाही बोला–

"ऐ बूढ़ी ! तुझे न सोना चाहिए और न चाँदी–केवल यह माचिस चाहिए। बता, इसमें ऐसी क्या बात है ?"

बूढ़ी आँखें घुमाकर मिनमिनाई–

"तुम्हें तो धन मिल ही गया। अब वह माचिस मुझे दे दो।"



"पहले मुझे इस माचिस का भेद बता।"

"मैं नहीं बताऊँगी।" सिपाही ने तलवार निकाल ली और कहा, "मैं फिर कहता हूँ, मुझे इस माचिस का रहस्य बता दे। अवश्य ही तू मेरे साथ कोई चाल चल रही है !"

बूढ़ी की आँखों से क्रोध की आग बरसने लगी।

"मैं नहीं बताऊँगी," उसने घृणा से कहा।

सिपाही ने तलवार के एक ही वार में चुड़ैल को मार डाला–और आगे चल पड़ा। सिक्कों के बोझ के कारण वह धीरे-धीरे चल रहा था।

जंगल मीलों लम्बा था।

घंटों जंगल में चलते रहने के बाद वह खुले मैदान में आ गया जहाँ उसे घरों की छतें और एक ऊँचा-सा मीनार दिखाई दिया।

वह नगर था—देश की राजधानी।

बड़ा ही सुन्दर नगर था जिसमें ऊँचे-ऊँचे भवन, चौड़ी सड़कें, हरे-भरे बाग़ और भरे हुए बाज़ार थे। नगरवासी बड़े सुखी और खुशहाल लगते थे।

नगर के बीच में एक बहुत ऊँचा मीनार था—जो लोहे का था। उस मीनार को देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने वहाँ एक बड़ा-सा सुन्दर भवन ख़रीदा और मज़े से रहने लगा।

क्योंकि उसके पास बहुत-सा धन था इसलिए उसके चारों ओर झूठे और खुशामदी मित्र इकट्‌ठे हो गए।

वे उससे धन ऐंठते रहते थे।

एक दिन उसने मित्रों से पूछा—

"इस नगर के बीच में यह लोहे का मीनार कैसा है ?"

मित्रों ने उसे एक कहानी सुनाई—

उस नगर के राजा की कोई संतान नहीं थी। इसीलिए राजा और रानी बड़े दुखी रहा करते थे।

बड़ी दुआओं के बाद रानी ने एक बड़ी ही सुन्दर बेटी को जन्म दिया। उसके जन्म पर नगर में एक उत्सव-सा मनाया गया और नगरवासी सड़कों पर नाचे और गाए।

राजा और रानी बहुत खुश थे परन्तु उनकी खुशी अधिक समय तक नहीं रही। कारण यह था कि ज्योतिषियों ने उसका हाथ देखकर बताया था कि वह बड़ी होकर एक साधारण सिपाही से विवाह करेगी।

इस बात से राजा और रानी के दिल को धक्का लगा और उन्होंने नगर के बीच एक महल बनवाया जिसके अन्दर उनकी आज्ञा के बिना एक पक्षी भी उड़कर नहीं जा सकता था। उसी महल में राजकुमारी का पालन-पोषण हुआ था। महल में उसके लिए संसार के सारे सुख उपलब्ध किए गए थे—केवल वह बाहर नहीं जा सकती थी।

जब सिपाही ने पूछा—

"और यह लोहे का मीनार किसलिए है ?"

तो लोगों ने बताया—

"जब आकाश पर चाँद नहीं होता और चारों ओर अँधेरा होता है तो वह मीनार के ऊपर चढ़ जाती है और उसके शरीर से फूटने वाला प्रकाश चाँदनी का काम करता है।"

वह कहानी सुनकर उसके मन में राजकुमारी को देखने की चाहत पैदा हुई, परन्तु यह संभव नहीं था।

वह केवल ठंडी साँस भरकर रह गया।

वह राजाओं जैसा जीवन बिता रहा था। उसके मित्र उसे दोनों हाथों से लूट रहे थे।

एक दिन ऐसा भी आया जब उसके पास एक भी सिक्का न बचा।

जिस प्रकार अँधेरे में अपनी छाया भी साथ छोड़ देती है, उसी प्रकार उसके झूठे मित्र उसे छोड़ भागे।

वह जिसके पास भी जाता, निराश ही लौटता था।

जब वह उन्हें याद दिलाता कि उसने किस प्रकार उन पर अपना धन लुटाया है तो वे यही कहते थे—

"तुमने अपनी मूर्खता के कारण अपना धन लुटा दिया। अब उसकी सज़ा भी भुगतने को तैयार हो जाओ।"

उसे अपना भवन भी बेचना पड़ा।

अब वह छोटी-सी अँधेरी झोंपड़ी में रहने लगा।

एक रात वह झोंपड़ी में भूखा बैठा था। झोंपड़ी में अँधेरा था क्योंकि दीपक ही नहीं था। वह सोच रहा था—

'अब मैं क्या करूँ ? इस प्रकार तो भूखा मर जाऊँगा। मैं भी कैसा मूर्ख था जो धन को इस बुरी तरह लुटा दिया। जिन पर धन लुटाया था, वे सब पहचानते तक नहीं। दोष मेरा ही है।'

भूख में नींद भला कहाँ आती है !

उसने सोचा, 'चलो, पाइप ही पी लूँ।' पाइप जेब से निकालकर मुँह से लगाया, परन्तु उसे जलाता कैसे ?

अचानक उसे वह माचिस याद आई जिसे उसने कचरे में फेंक

दिया था।

उसने उसे ढूँढ़कर तीली निकाली और जैसे ही बक्स पर रगड़ा कि 'धड़' से द्वार खुला और ताँबे के रंग वाला कुत्ता आकर खड़ा हो गया।

वह आश्चर्य से आँखें फैलाए उसे देख ही रहा था कि कुत्ता बोला, "ऐ मालिक, इस तीली को एक बार रगड़ोगे तो मैं आ जाऊँगा। दो बार रगड़ने पर चाँदी के रंग वाला कुत्ता आएगा। तीन बार रगड़ने से सोने के रंग वाला आएगा—और चार बार रगड़ने से हम तीनों चले आएँगे। बोलो, क्या आज्ञा है ?"

सिपाही उसकी बात सुनकर फूला न समाया और बोला, "जा, मेरे लिए सिक्के ले आ।"

कुत्ता छलाँग लगाकर बाहर गया और क्षण भर में ताँबे के सिक्कों से भरी एक थैली मुँह में दबाकर वापस लौट आया।

अब तो सिपाही के मज़े आ गए। वह जब चाहता, सिक्के मँगा सकता था।

उसने फिर अच्छा-सा भवन ख़रीदा और सुख से रहने लगा।

परन्तु अब वह सावधान था और उसने झूठे मित्र नहीं बनाए।

एक रात वह बैठा राजकुमारी के विचारों में खोया हुआ था।

'काश, मैं उसे पास से देख सकता !' उसके मन ने पुकारा, 'परन्तु कैसे देखूँ ? मैं महल में नहीं जा सकता और वह बाहर नहीं आ सकती !'

फिर उसे ध्यान आया—उस माचिस का।

उसने तीली को एक बार रगड़ा—

ताँबे की रंगत वाला कुत्ता तुरन्त अन्दर आकर बोला—

"मेरे मालिक की क्या आज्ञा है ?"

सिपाही ने पूछा—

"क्या तू राजकुमारी को ला सकता है ?"

"क्यों नहीं," कुत्ते ने उत्तर दिया, "मैं जादुई कुत्ता हूँ और सब कुछ कर सकता हूँ।" कुत्ता यह कहकर बाहर गया—और जब वापस आया तो उसकी पीठ पर राजकुमारी गहरी नींद सो रही थी।

सिपाही उसका रूप देखकर उस पर मोहित हो गया। वह उसके



चेहरे को देर तक तकता रहा, फिर कुत्ते से कहा—

"इसे वापस ले जा।"

कुत्ता राजकुमारी को लेकर चला गया और सिपाही ठंडी आहें भरता रहा।

अगले दिन सवेरा होने पर राजकुमारी ने राजा और रानी से कहा—

"रात मैंने एक अनोखा स्वप्न देखा।"

राजा और रानी ने पूछा—

"क्या था वह स्वप्न ?"

वह बोली—

"मैंने देखा, एक कुत्ता मुझे पीठ पर लादकर एक भवन में ले गया जहाँ एक सिपाही मेरे चेहरे को तकता रहा, फिर वही कुत्ता मुझे वापस ले आया।"

राजा और रानी हँसकर बोले, "स्वप्न ऐसे ही उल्टे-सीधे होते हैं। सपनों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।"

अगली रात को सिपाही ने कुत्ते के द्वारा राजकुमारी को फिर बुलवाया। उसके अगले दिन राजकुमारी ने अपने माता-पिता को फिर वह स्वप्न सुनाया।

रानी चिन्ता में पड़ गई।

उसने मन में कहा, 'कुछ गड़बड़ लगती है क्योंकि एक ही स्वप्न दो बार नहीं देखा जाता ! मुझे कुछ करना चाहिए।'

परन्तु क्या ?

सपनों के अपराधी को पकड़ना सरल काम तो न था।

बहुत सोचने के बाद एक विचार उसके मन में आया। जब राजकुमारी सो गई तो रानी ने उसकी कमर से एक छोटी-सी थैली बाँध दी और थैली में आटा भरकर उसमें एक छोटा-सा छेद कर दिया।

"अब चोर पकड़ा ही जाएगा !" वह बड़बड़ाई।

तीसरी रात फिर सिपाही ने उसे बुलवाया।

सवेरा होने पर रानी ने पूछा—

"रात तुमने कौन-सा स्वप्न देखा ?"

राजकुमारी ने उत्तर दिया—

"मैं तो ऊब गई हूँ वही स्वप्न देखते-देखते। रात मैंने फिर वह स्वप्न देखा कि एक कुत्ता मुझे अपनी पीठ पर लादकर उसी भवन में ले गया। वहाँ वही सिपाही मुझे देखता रहा, फिर कुत्ता मुझे वापस ले आया।"

रानी ने कहा—

"घबराओ नहीं। अगर वह स्वप्न नहीं है तो फिर हमें सच्चाई का पता चल जाएगा।" यह कहकर उसने एक सिपाही को बुलाकर कहा—

"राजकुमारी के सोने के कमरे से बाहर अगर तुम्हें आटे की रेखा दिखाई दे तो यह पता लगाओ कि वह कहाँ तक जाती है !"

सिपाही ने रेखा को देखकर चलना आरम्भ किया और चलते-चलते उस सिपाही के भवन तक जा पहुँचा।

उसने आकर रानी को बताया और रानी ने अपने सिपाहियों को भेजकर उस सिपाही को पकड़कर बुलवा लिया।

राजा ने क्रोध से काँपते हुए भरे दरबार में उससे कहा—

"तूने रातों को कुत्ते के द्वारा राजकुमारी को अपने भवन में बुलवाया है और इस भयंकर अपराध के लिए तुझे मौत की सज़ा दी जाती है। कल सवेरे बड़े मैदान में सारे नगरवासियों के सामने तेरा सिर

काट दिया जाएगा।''

और उसे क़ैदख़ाने में डाल दिया गया।

वह बड़ा परेशान था। मौत सिर पर नाच रही थी।

उसका बचना असंभव ही लगता था।

सबसे बुरी बात यह कि माचिस घर पर ही रह गई थी।

रात उसने जागकर बिताई।

जब सवेरा हुआ तो उसने देखा कि नगरवासी बड़े मैदान की ओर जा रहे थे। वह खिड़की में से बाहर देख रहा था।

इतने में एक लड़का भागता हुआ खिड़की के पास से निकला।

उसने आवाज़ दी, ''ओ लड़के, कहाँ जा रहा है ?''

''तुम्हारा सिर कटने का तमाशा देखने,'' लड़के ने उत्तर दिया।

वह बोला, ''मेरा सिर मेरे वहाँ जाने पर ही कटेगा। अभी तमाशा आरम्भ होने में समय है। अच्छा, यह बता, क्या तू सोने का सिक्का लेगा ?''

''सोने का सिक्का !'' लड़के ने आश्चर्य से कहा, ''क्यों नहीं !''

''तुझे एक काम करना होगा।''

''मैं दस काम करने को तैयार हूँ।''

''तो सुन, मेरे घर जाकर मेज़ पर रखी हुई एक माचिस लाकर मुझे दे दे।'' सिपाही ने कहा और अपने भवन का पता बताया।

लड़का तुरन्त उसके भवन की ओर भाग गया और माचिस लेकर हाँफता-काँपता वापस लौट आया।

सिपाही को माचिस मिल गई और लड़के को सोने का सिक्का। दोनों खुश हो गए।

राजा के सिपाही उसे बड़े मैदान में ले गए जहाँ हज़ारों नगरवासियों के साथ राजा, रानी और राजकुमारी भी तमाशा देखने आए थे। एक जल्लाद नंगी तलवार लिये खड़ा था।

राजा ने सिपाही से कहा—

''कोई अन्तिम इच्छा हो तो बताओ ?''

सिपाही ने मुस्कुराकर उत्तर दिया, ''क्या मैं पाइप पी सकता हूँ ?''

''हाँ-हाँ, पी सकते हो।'' राजा बोला।

उसने पाइप मुँह से लगाया और तीली को माचिस पर रगड़ा—एक बार—दो बार—तीन बार !

तीनों कुत्ते मैदान में आ कूदे और उससे बोले, "क्या आदेश है, मालिक ?"

"ये राजा और रानी मुझे मार डालना चाहते हैं, मुझे बचाओ !" सिपाही ने कहा।

कुत्तों ने राजा और रानी को मार डाला।

नगरवासियों ने चिल्लाकर सिपाही से कहा—

"राजा और रानी दोनों ही अत्याचारी थे। उनके मरने से हमें खुशी है। अब तुम राजकुमारी के साथ विवाह करके हमारे राजा बन जाओ।"

इस प्रकार ज्योतिषियों ने जो कहा था, वही हुआ।

राजकुमारी का विवाह एक साधारण सिपाही के साथ ही हुआ।

चार मित्र

जॉन एक बहुत बड़े राजा का पुत्र था। वह अपने पिता की इकलौती सन्तान था और पिता के बाद वही सिंहासन पर बैठने वाला था।

माता-पिता का लाड़-प्यार उस पर बहुत था और वे उसकी कोई बात नहीं टालते थे; परन्तु उन्होंने उसकी एक बात नहीं मानी।

हुआ यह कि पड़ोसी देश पर एक रानी राज करती थी जो बड़ी ज़ालिम और कठोर दिल की थी।

उसकी एक ही बेटी थी—ऐसी सुन्दर जैसे चौदहवीं का चाँद। उसके सोने जैसे सुनहरे बाल, बर्फ़ जैसा सफ़ेद चेहरा, झील के पानी जैसी नीली आँखें, गुलाबी होंठ और मोती जैसे दाँत थे।

रानी उससे बहुत प्रेम करती थी। वह नहीं चाहती थी कि उसका विवाह हो।

बहुत-से राजकुमार उससे विवाह करना चाहते थे। रानी ने उन्हें टालने का एक उपाय सोच लिया था।

वह हर आने वाले से यह कहती—

'अगर तुमने दो शर्तें पूरी कर दीं तो राजकुमारी का विवाह तुम्हारे साथ कर दिया जाएगा, और अगर न कर सके तो तुम्हारा सिर काट दिया जाएगा।'

शर्तें इतनी कठिन थीं कि उन्हें कोई भी पूरा न कर सकता था। इस कारण कई राजकुमार अपने सिर कटवा चुके थे।

जॉन को भी राजकुमारी की सुन्दरता का पता चला तो उसने माता-पिता से कहा—

"मैं राजकुमारी से विवाह करना चाहता हूँ।"

उन्होंने कहा—

"क्या तुम पागल हुए हो ? जानते नहीं कि अब तक बीसों युवक अपने प्राण खो चुके हैं ? तुम हमारे इकलौते पुत्र हो। हम तुम्हें खोना नहीं चाहते।"

जॉन ने भी हठ पकड़ ली और खाना-पीना छोड़ दिया।

धीरे-धीरे वह बीमार और कमज़ोर होता गया।

जब माता-पिता ने देखा कि वह नहीं मानेगा तो उन्होंने उससे कहा—

"अच्छा, तो फिर तुम चले जाओ।"

वह एकदम खुश हो गया और कुछ दिनों ही में पहले की तरह स्वस्थ हो गया। और एक दिन वह सवेरे ही सवेरे चल पड़ा।

चलते-चलते दोपहर हो गई। सूर्य बीच आकाश से आग बरसा रहा था। गर्मी बहुत थी। जॉन ने अपने कोट के बटन खोल दिए। वह सिर से पैर तक पसीने में नहाया हुआ था। दूर-दूर तक किसी वृक्ष की छाया भी नहीं थी।

अचानक दूर उसे एक टीला-सा दिखाई दिया और आश्चर्य की बात यह थी कि वह धीरे-धीरे ऊपर-नीचे हो रहा था।

जब वह निकट पहुँचा तो देखा—वह टीला नहीं, एक मोटे आदमी का पेट था। मोटा गहरी नींद सो रहा था और उसका पेट ऊपर-नीचे हो रहा था।



जॉन ने आवाज़ दी तो वह उठ गया और आँखें मलता हुआ बड़बड़ाया–

"एक भूखे की नींद ख़राब करके तुमने अच्छा नहीं किया।"

"क्या तुम भूखे हो ?" जॉन ने पूछा।

"सवेरे नाश्ते में दस घोड़े, एक हज़ार रोटियाँ और पाँच हज़ार सेब खाए थे। अब भूख चमक उठी है।" मोटा बोला।

जॉन की आँखें फटी की फटी रह गईं।

"इतना खाकर भी तुम भूखे हो !" उसने कहा, "तुम मेरे साथ आओ। मैं एक राजकुमार हूँ और मेरे साथ रहकर तुम भूखे नहीं रहोगे।"

मोटा उसके पीछे चल पड़ा।

थोड़ी दूर चलने के बाद एक आदमी बैठा दिखाई दिया जो कम्बल लपेटे थरथर काँप रहा था और कह रहा था–

"उफ़, यह सर्दी ! हो, हो, हो !"

जॉन ने कहा–

"सूर्य सिर पर है, गर्मी से बुरा हाल है–और तुम सर्दी की बात कर रहे हो !"

वह आदमी बोला–

"मेरा नाम 'ठंडे ख़ाँ' है। अगर मैं कम्बल उतार दूँ तो भयंकर सर्दी पड़ने लगेगी। यह देखो।"

जैसे ही उसने कम्बल उतारा, सूर्य धुंध में छुप गया और बर्फ़ गिरने लगी। वे सब सर्दी से काँपने लगे।

जॉन ने उसे कम्बल उढ़ा दिया–सूर्य फिर चमकने लगा और गर्मी पड़ने लगी।

"तुम भी मेरे साथ आओ।" जॉन ने कहा और तीनों आगे चल पड़े।

कुछ दूर और चलकर उन्होंने एक आदमी को देखा जो धरती से कान लगाए लेटा था।

जॉन ने पूछा–

"तुम कौन हो और क्या कर रहे हो ?"

वह उठकर खड़ा हो गया। अब उन्होंने देखा, उसका एक कान हाथी के कान से भी बड़ा था।

उसने कहा–

"जब मैं इस कान को धरती से लगाता हूँ तो संसार की सारी आवाज़ें सुन सकता हूँ।"

"तुम भी मेरे साथ आओ।" जॉन ने कहा और आगे चल पड़े।

कई दिनों के बाद वे सुनहरे बालों वाली राजकुमारी के महल में पहुँच गए।

महल में उन्हें मेहमानख़ाने में ठहराया गया।

अगले दिन रानी ने जॉन को बुलाया।

"ऐ सुन्दर राजकुमार ! क्यों अपनी जान के पीछे पड़ा है ?" रानी बोली, "जो भी मेरी बेटी का हाथ माँगने आता है, अपने जीवन से भी हाथ धो बैठता है। जा, वापस लौट जा।"

जॉन ने कहा–

"मैं वापस लौटने के लिए नहीं आया हूँ। तुम अपनी शर्तें बताओ।"

रानी बोली–

"अच्छा, तो मेरे प्रश्न का उत्तर दे। बोल, वह कौन-सी माँ है जो हर क्षण बालकों को जन्म देती और खाती रहती है ?"

जॉन चक्कर में पड़ गया। रानी का प्रश्न बड़ा कठिन था।

वह विचार में डूबा हुआ खिड़की के पास खड़ा हो गया। सामने ही समुद्र दिखाई दे रहा था।

अचानक वह मुस्कुरा दिया। उसे उत्तर मिल गया था।

वह बोला–

"वह माँ समुद्र है और लहरें बालक हैं। लहरें समुद्र में से उठती हैं और फिर उन्हें समुद्र ही खा जाता है।"

रानी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया।

"दूसरी शर्त क्या है ?" जॉन ने पूछा।

रानी दाँत पीसकर बोली–

"आज रात के भोजन के समय बताऊँगी।"

जब वह रात के भोजन के लिए गया तो रानी उसे रसोई में ले गई



जहाँ एक हज़ार रसोइयों ने सारा दिन भोजन बनाया था।

रानी ने कहा–

"तुम्हें सवेरे तक यह भोजन खा लेना होगा।"

जब रानी चली गई तो जॉन मोटे के पास गया और उसे रसोई में लाकर कहा, "तुम भूखे हो, कुछ खा लो।"

मोटा भोजन पर टूट पड़ा और देखते ही देखते न केवल भोजन बल्कि प्लेटें, प्याले, छुरी-काँटे और मेज़-कुर्सियाँ तक चट कर गया–और पेट पर हाथ फेरता हुआ बोला–

"बस, इतना-सा ही भोजन है ! मेरी भूख चमक उठी है।"

सवेरे जब रानी आई तो देखकर दंग रह गई। रसोई ख़ाली पड़ी थी और जॉन खड़ा कह रहा था, "क्या और भोजन नहीं है ? भूख से दम निकला जा रहा है।"

"नहीं !" रानी ने पैर पटकते हुए कहा।

जॉन ने हँसकर कहा, "क्या कोई और शर्त भी है ?"

"नहीं !" रानी अपने बाल नोचती हुई बोली।

जब रात हुई तो रानी के सेवकों ने जॉन से कहा, "आज रात तुम अपने मित्रों के साथ एक सुन्दर कमरे में सोओगे। कल तुम्हारा विवाह राजकुमारी के साथ हो जाएगा।"

उन चारों को एक कमरे में बन्द कर दिया गया।

धीरे-धीरे कमरा गर्म होने लगा। उन्होंने द्वार खोलना चाहा परन्तु वह बाहर से बन्द था। गर्मी बढ़ती जा रही थी।

वह कमरा वास्तव में लोहे का बहुत बड़ा बक्स था जिसके नीचे आग जला दी गई थी।

जॉन, मोटे और बड़े कान वाले का गर्मी के मारे बुरा हाल था।

केवल ठंडे ख़ाँ उछल-उछलकर कह रहे थे–"अहाहा–मज़ा आ रहा है !"

जॉन ने बढ़कर ठंडे ख़ाँ का कम्बल खींच लिया।

सवेरे जब रानी कमरे को खोलने के लिए आई तो वह सोच रही थी कि वे सब जल-भुन गए होंगे।

उसने द्वार खोला।

वे थरथर काँपते हुए बाहर आए—और कमरे में बर्फ़ ही बर्फ़ थी।

रानी की समझ में कुछ न आया। वह चमत्कार ही था।

"आज ही तुम्हारा विवाह राजकुमारी के साथ कर दूँगी।" उसने होंठ काटते हुए कहा।

परन्तु थोड़ी देर के बाद रानी ने आकर बताया कि राजकुमारी कहीं ग़ायब हो गई है।

जॉन ने बड़े कान वाले से कहा, "रानी कोई चाल चल रही है। तुम पता लगाओ, राजकुमारी कहाँ है।"

उसने धरती से कान लगाकर सुना और कहा, "मैं उसकी आवाज़ सुन रहा हूँ। वह कह रही है—'ऐ जॉन, रानी ने मुझे एक द्वीप में भेज कर क़ैद कर दिया है। यह द्वीप समुद्र में पाँच मील दूर है। आकर मुझे ले जाओ।' "

वे तुरन्त समुद्र के तट पर आए परन्तु वहाँ एक भी नाव नहीं थी। रानी के हुक्म से सारी नावें हटा दी गई थीं।

मोटे ने कहा, "मैं कुछ करता हूँ।"

वह झुककर समुद्र का पानी पीने लगा। फिर भी पानी कम न हुआ तो जॉन को एक उपाय सूझा। उसने ठंडे खाँ का कम्बल उतार दिया।

ठंड हो गई, बर्फ़ गिरने लगी।

समुद्र का पानी जम गया।

वे जमे हुए समुद्र पर चलते हुए द्वीप तक पहुँच गए।

राजकुमारी को क़ैद से छुड़ाकर जॉन अपने घर लौटा।

उसके माता-पिता राजकुमारी को देखकर बड़े खुश हुए।

जॉन, मोटा, ठंडे ख़ाँ और बड़े कान वाला चार मित्र बनकर साथ-साथ रहने लगे।

●●●